facebook.com/thebharatshri
twitter.com/thebharatshri
website thebharatshri

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 02 मार्च 2026 ● वर्ष 7 ● अंक 33 ● मूल्यः 5 रुपए

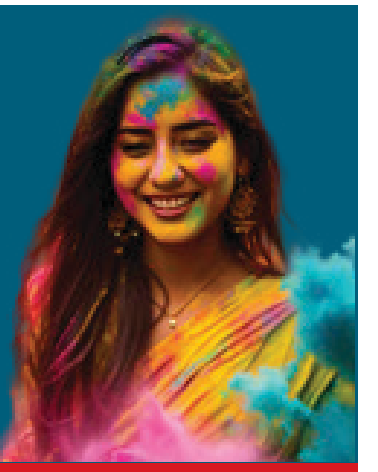

होली पर घर में बनाएं आयुर्वेदिक रंग

सुप्रीम लीडर खामेनेई की मौत

बेटी-दामाद, बहू-पोती भी मारी गईं

ईरान बोला- खतरनाक बदला लेंगे

युद्ध की आग में झुलसा पश्चिम एशिया

@ भारतश्री ब्यूरो

पश्चिम एशिया की धरती एक बार फिर बारूद की गंध से भर गई है। मिसाइलों की आवाज, धुएं से ढका आसमान और भय में डूबे शहरों के बीच एक ऐसी खबर सामने आई जिसने पूरी दुनिया को बेचैन कर दिया। ईरान पर हुए बड़े हवाई हमलों के बाद यह दावा किया गया कि देश के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई की मौत हो गई है। हालांकि इस खबर को लेकर अलग-अलग स्रोतों में अलग-अलग दावे सामने आ रहे हैं और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसकी स्वतंत्र पुष्टि अभी स्पष्ट रूप से नहीं हो सकी है।बताया जा रहा है कि इजराइल और संयुक्त राज्य अमेरिका की संयुक्त कार्रवाई में 24 घंटे के भीतर ईरान के कई शहरों पर बड़े पैमाने पर बमबारी की गई। हमलों का मुख्य निशाना राजधानी तेहरान सहित सैन्य ठिकाने और कमांड सेंटर बताए जा रहे हैं।

एक रात जिसने पूरे देश को हिला दिया

तेहरान की सुबह उस दिन सामान्य नहीं थी। लोग जब घरों से बाहर निकले तो आसमान में धुएं की परत थी। कई इलाकों में बिजली बाधित थी और सड़कों पर एम्बुलेंसों की आवाज लगातार सुनाई दे रही थी।स्थानीय मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, एक बड़े सरकारी परिसर पर दर्जनों मिसाइलें दागी गईं। कहा गया कि उसी परिसर में उस समय उच्च सैन्य अधिकारियों की बैठक चल रही थी। इसी हमले में खामेनेई और उनके परिवार के कुछ सदस्यों के मारे जाने का दावा किया गया।ईरान के सरकारी सूत्रों ने देशभर में शोक की घोषणा की बात कही, जबकि सेना ने कड़े जवाब की चेतावनी दी।

दावों और सच्चाई के बीच उलझी दुनिया

इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने देर रात बयान जारी कर हमलों को सुरक्षा कार्रवाई बताया।

खामेनेई कौन थे

अयातुल्ला अली खामेनेई का जन्म 1939 में ईरान के मशहद शहर में हुआ था। धार्मिक शिक्षा से जुड़े परिवार में पले-बढ़े खामेनेई ने कम उम्र से ही इस्लामी राजनीति में रुचि दिखाई।1979 की इस्लामी क्रांति के बाद वे धीरे-धीरे सत्ता के केंद्र में पहुंचे। 1981 में वे ईरान के राष्ट्रपति बने और 1989 में देश के सर्वोच्च नेता। समर्थकों के लिए वे इस्लामी व्यवस्था के संरक्षक रहे, जबकि आलोचकों ने उन्हें कठोर शासन का प्रतीक बताया।चार दशक से ज्यादा समय तक वे ईरान की राजनीति के सबसे प्रभावशाली चेहरों में रहे।

इसके कुछ समय बाद अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने भी अपने स्तर पर खामेनेई के मारे जाने का दावा किया।हालांकि अंतरराष्ट्रीय विश्लेषकों का कहना है कि ऐसे समय में सूचनाओं का युद्ध भी उतना ही तेज होता है जितना मिसाइलों का। कई बार आधिकारिक पुष्टि आने में समय लगता है और अलग-अलग पक्ष अपने-अपने दावे करते हैं।

कई सैन्य ठिकाने और इमारतें क्षतिग्रस्त हुईं

एक स्कूल पर हमले की खबर ने सबसे ज्यादा भावनात्मक प्रतिक्रिया पैदा की। स्थानीय स्रोतों ने छात्राओं के मारे जाने की बात कही, हालांकि इन आंकड़ों की भी स्वतंत्र पुष्टि जारी है। युद्ध में सबसे ज्यादा नुकसान हमेशा आम लोगों का होता है।

आंकड़ों में दिखती तबाही

प्रारंभिक रिपोर्टों के अनुसार

10 से अधिक बड़े शहरों को निशाना बनाया गया

200 से ज्यादा लोगों की मौत का दावा

700 से अधिक घायल बताए जा रहे हैं

पलटवार की चेतावनी और बढ़ता तनाव

ईरान की सेना और रिवोल्यूशनरी गार्ड ने कहा है कि जवाबी कार्रवाई शुरू की जाएगी। रिपोर्टों में दावा किया गया कि ड्रोन और मिसाइलों के जरिए कई ठिकानों को निशाना बनाया गया। पश्चिम एशिया के कई देशों में सुरक्षा बढ़ा दी गई है। तेल बाजार से लेकर अंतरराष्ट्रीय राजनीति तक हर जगह इसका असर दिखाई देने लगा है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि संघर्ष लंबा चला तो इसका प्रभाव पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था पर पड़ सकता है।

आखिर इतना गहरा है विवाद क्यों

ईरान और इजराइल के बीच तनाव कोई नया नहीं है। इसके पीछे कई कारण रहे हैं।अमेरिका और उसके सहयोगी देशों को लंबे समय से आशंका रही है कि ईरान परमाणु हथियार विकसित कर सकता है। ईरान हमेशा कहता रहा है कि उसका कार्यक्रम केवल ऊर्जा और शोध के लिए है।

पश्चिम एशिया में प्रभाव बढ़ाने को लेकर कई देशों के बीच प्रतिस्पर्धा है। अलग-अलग समूहों और राजनीतिक गठबंधनों ने इस संघर्ष को और जटिल बना दिया है। अमेरिका द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों ने ईरान की अर्थव्यवस्था पर गहरा असर डाला है। इसके जवाब में ईरान ने कई बार सख्त रुख अपनाया।

युद्ध के बीच इंसान की कहानी

तेहरान की एक बुजुर्ग महिला ने स्थानीय मीडिया से कहा,हमें राजनीति नहीं समझ आती, हमें बस इतना पता है कि हमारे बच्चे सुरक्षित रहें।एक पिता अस्पताल के बाहर रोते हुए दिखा। उसकी बेटी घायल थी। वह बार-बार यही कह रहा था कि रंगों से भरी कॉपी लेकर स्कूल गई थी, और अब अस्पताल में है।युद्ध की खबरों में अक्सर आंकड़े दिखाई देते हैं, लेकिन उन आंकड़ों के पीछे टूटते घर, बिखरते सपने और डर से भरी रातें होती हैं।

दुनिया क्यों चिंतित है?

विशेषज्ञ मानते हैं कि यह संघर्ष यदि बढ़ता है तो इसका असर केवल पश्चिम एशिया तक सीमित नहीं रहेगा। तेल की कीमतें, व्यापार मार्ग और वैश्विक सुरक्षा सब प्रभावित हो सकते हैं।संयुक्त राष्ट्र सहित कई देशों ने संयम बरतने की अपील की है।सवाल अभी भी बाकी हैं ,क्या खामेनेई की मौत की खबर पूरी तरह सत्य है?क्या यह संघर्ष बड़े युद्ध में बदल सकता है?क्या कूटनीति फिर से रास्ता बना पाएगी?इन सवालों के जवाब आने वाले दिनों में स्पष्ट होंगे।

इतिहास बताता है कि युद्ध कभी स्थायी समाधान नहीं देता। हर युद्ध के बाद सीमाएं भले बदलें, लेकिन इंसान का दर्द वही रहता है।तेहरान, गाजा, तेल अवीव या किसी भी शहर में रहने वाला आम आदमी केवल शांति चाहता है। उसे न सत्ता चाहिए, न हथियारों की ताकत। उसे चाहिए सुरक्षित घर, स्कूल जाते बच्चे और डर से मुक्त जीवन। मिसाइलें आसमान को चीर सकती हैं, लेकिन इंसान के दिल में बसे भय को नहीं मिटा सकतीं।शायद दुनिया को फिर याद करने की जरूरत है कि ताकत का सबसे बड़ा रूप विनाश नहीं, बल्कि शांति है।

MN DIVINE

ORDER ALL TYPES OF :

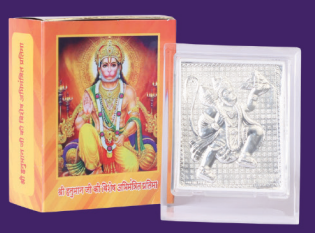

- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.

NOW GET AT YOUR HOME ON

MNDIVINE.COM

ORDER NOW

https://mndivine.com/

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

अदालत के फैसले के बाद केजरीवाल का शक्ति प्रदर्शन

राजनीति, आरोप और भरोसे की नई लड़ाई

@ मनीष पांडेय

दिल्ली की राजनीति में एक बार फिर हलचल तेज हो गई है। अदालत के फैसले के बाद राजधानी के जंतर-मंतर पर आयोजित रैली में अरविन्द केजरीवाल ने जिस अंदाज में मंच संभाला, वह सिर्फ एक राजनीतिक भाषण नहीं था, बल्कि पिछले कई वर्षों के आरोपों, जांचों और संघर्षों के बाद अपनी छवि को दोबारा स्थापित करने की कोशिश भी थी।रैली में पहुंचे हजारों समर्थकों के बीच केजरीवाल का स्वर कभी भावुक हुआ, तो कभी आक्रामक। उन्होंने कहा कि कथित शराब नीति मामले में अदालत का फैसला भारतीय जनता पार्टी के लिए करारा जवाब है। उन्होंने सीधे तौर पर प्रधानमंत्री और केंद्रीय गृह मंत्री पर आरोप लगाया कि आम आदमी पार्टी को खत्म करने के लिए राजनीतिक दबाव बनाया गया।यह रैली केवल एक राजनीतिक कार्यक्रम नहीं थी, बल्कि एक संदेश भी था कि अदालत से राहत मिलने के बाद आम आदमी पार्टी अब फिर से आक्रामक मोड में लौट रही है।

अदालत का फैसला और राजनीतिक असर

दिल्ली की राऊज एवेन्यू कोर्ट द्वारा कथित शराब नीति मामले में राहत मिलने के बाद राजनीतिक समीकरण अचानक बदलते नजर आए। केजरीवाल ने मंच से कहा कि अदालत ने साफ कर दिया कि भ्रष्टाचार के आरोप साबित नहीं हुए।उन्होंने दावा किया कि चार साल तक लगातार जांच एजेंसियों का दबाव बनाया गया, लेकिन कुछ भी साबित नहीं हो पाया।उनके अनुसार यह सिर्फ एक कानूनी जीत नहीं, बल्कि राजनीतिक संघर्ष की जीत है।राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह मामला पिछले कुछ वर्षों में दिल्ली की राजनीति का सबसे बड़ा मुद्दा बन चुका था। इस मामले में जांच एजेंसियों की कार्रवाई, गिरफ्तारी और लंबी पूछताछ ने आम आदमी पार्टी की राजनीति को प्रभावित किया।

भावनाओं और रणनीति का मिश्रण

दिल्ली का जंतर-मंतर लंबे समय से राजनीतिक आंदोलनों का केंद्र रहा है। यही वह जगह है जहां से कई बड़े आंदोलन शुरू हुए।जब केजरीवाल मंच पर पहुंचे, तो भीड़ ने ईमानदारी की जीत के नारे लगाए। उन्होंने अपने भाषण की शुरुआत व्यक्तिगत अनुभवों से की।उन्होंने कहा कि IIT से पढ़ाई के बाद वे विदेश जा सकते थे, लेकिन देश सेवा के लिए भारत में रहने का फैसला किया। आयकर विभाग की नौकरी के दौरान रिश्वत न लेने का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि उनकी पूरी राजनीति ईमानदारी पर आधारित रही है।उनका यह बयान साफ तौर पर उनकी राजनीतिक पहचान को फिर से मजबूत करने की कोशिश के रूप में देखा जा रहा है।

परिवार और संघर्ष की कहानी

रैली के दौरान केजरीवाल का स्वर तब भावुक हो गया जब उन्होंने अपने परिवार का जिक्र किया।उन्होंने कहा कि जांच और आरोपों के दौर में उनका परिवार मानसिक दबाव से गुजरा। उन्होंने बताया कि उनकी मां बीमार हो गई थीं और कई बार रोईं।राजनीति में अक्सर आरोप और प्रत्यारोप सामान्य माने जाते हैं, लेकिन जब नेता अपने व्यक्तिगत संघर्ष को सार्वजनिक मंच पर साझा करता है, तो उसका सीधा असर समर्थकों की भावनाओं पर पड़ता है।यही वजह रही कि रैली में मौजूद लोगों ने इस हिस्से पर सबसे ज्यादा प्रतिक्रिया दी।

आम आदमी पार्टी की रणनीति में बदलाव

आम आदमी पार्टी के लिए यह मामला केवल कानूनी नहीं बल्कि राजनीतिक अस्तित्व का भी सवाल बन गया था। पिछले कुछ वर्षों में पार्टी के कई बड़े नेताओं पर जांच एजेंसियों की कार्रवाई हुई। इनमें मनीष सिसोदिया और संजय सिंह जैसे नाम शामिल रहे।रैली के मंच से केजरीवाल ने कहा कि एक समय पार्टी के शीर्ष पांच नेता जेल में थे, लेकिन संगठन टूटने के बजाय और मजबूत हुआ।विश्लेषकों के अनुसार यह बयान पार्टी कैडर को संदेश देने के लिए था कि नेतृत्व अब भी नियंत्रण में है।

भाजपा पर सीधा हमला

रैली में केजरीवाल ने सीधे तौर पर भाजपा पर हमला बोला।उन्होंने कहा कि राजनीतिक विरोध को खत्म करने के लिए जांच एजेंसियों का इस्तेमाल किया गया।हालांकि भाजपा की ओर से पहले भी ऐसे आरोपों को खारिज किया जाता रहा है और पार्टी का कहना रहा है कि कानून अपना काम कर रहा है।भारतीय राजनीति में जांच एजेंसियों की भूमिका को लेकर लंबे समय से बहस चलती रही है। यह मुद्दा हर चुनाव में अलग-अलग रूप में सामने आता है।

मंदिर दर्शन और राजनीतिक संकेत

रैली से एक दिन पहले केजरीवाल दिल्ली के कनॉट प्लेस स्थित हनुमान मंदिर पहुंचे थे। उनके साथ पत्नी सुनीता केजरीवाल और पार्टी के कई नेता मौजूद थे।राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह कदम भी एक संदेश था।पिछले कुछ वर्षों में भारतीय राजनीति में धार्मिक प्रतीकों का प्रभाव बढ़ा है। ऐसे में नेताओं का मंदिर जाना केवल आस्था का विषय नहीं, बल्कि राजनीतिक रणनीति का हिस्सा भी माना जाता है।कानूनी विशेषज्ञों का कहना है कि सीबीआई मामले में राहत मिलने के बाद प्रवर्तन निदेशालय से जुड़े मामले पर भी असर पड़ सकता है।हालांकि अंतिम फैसला अदालत की सुनवाई पर निर्भर करेगा।राजनीति में अक्सर देखा गया है कि कानूनी लड़ाई और राजनीतिक लड़ाई साथ-साथ चलती हैं। यह मामला भी उसी दिशा में आगे बढ़ता नजर आ रहा है।

दिल्ली की राजनीति का बदलता परिदृश्य

दिल्ली की राजनीति पिछले एक दशक में काफी बदली है।एक ओर राष्ट्रीय स्तर की राजनीति का प्रभाव बढ़ा है, तो दूसरी ओर स्थानीय मुद्दों पर आधारित राजनीति भी मजबूत हुई है।पानी, बिजली, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों ने राजधानी की राजनीति को नया स्वरूप दिया।केजरीवाल ने अपने भाषण में इन मुद्दों का जिक्र करते हुए कहा कि उनकी सरकार ने स्कूल और अस्पतालों में सुधार किया।रैली में केजरीवाल ने कहा कि असली फैसला जनता करती है।उन्होंने चुनौती देते हुए कहा कि अगर दिल्ली में तुरंत चुनाव हो जाए और भाजपा दस से ज्यादा सीटें जीत ले तो वह राजनीति छोड़ देंगे।यह बयान राजनीतिक तौर पर आक्रामक रणनीति का संकेत माना जा रहा है।

राजनीतिक विशेषज्ञों के अनुसार ऐसे बयान कार्यकर्ताओं में उत्साह भरने के लिए दिए जाते हैं।भारतीय राजनीति में छवि सबसे बड़ा हथियार होती है।एक आरोप किसी नेता की पूरी राजनीतिक यात्रा को प्रभावित कर सकता है, वहीं एक अदालत का फैसला उस छवि को फिर से मजबूत भी कर सकता है।केजरीवाल की राजनीति की शुरुआत भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन से हुई थी। ऐसे में उनके लिए यह मामला और भी संवेदनशील था।अदालत से राहत मिलने के बाद अब असली परीक्षा राजनीतिक मैदान में होगी।दिल्ली में आने वाले चुनाव, गठबंधन की संभावनाएं और राष्ट्रीय राजनीति में भूमिका-इन सब पर इस फैसले का असर पड़ सकता है।रैली से यह साफ संकेत मिला कि आम आदमी पार्टी अब रक्षात्मक राजनीति से बाहर निकलकर आक्रामक रणनीति अपनाने जा रही है।

केरल का नाम क्यों बदला जा रहा है? केरलम नाम के पीछे की पूरी कहानी

केंद्रीय कैबिनेट की मंजूरी और आगे की प्रक्रिया

केंद्रीय कैबिनेट ने 24 फरवरी 2026 को केरल राज्य का नाम केरलम करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। यह फैसला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई बैठक में लिया गया। केरल विधानसभा ने 24 जून 2024 को सर्वसम्मति से प्रस्ताव पास किया था जिसमें नाम बदलने की मांग की गई थी। इससे पहले अगस्त 2023 में भी ऐसी ही एकमत की सिफारिश हुई थी। मुख्यमंत्री पिनारायी विजयन ने खुद यह प्रस्ताव पेश किया था। अब केरल नाम बदलाव बिल 2026 राष्ट्रपति के पास जाएगा जो इसे राज्य विधानसभा को राय देने के लिए भेजेंगे। इसके बाद संसद में चर्चा होगी और संविधान की पहली अनुसूची में बदलाव किया जाएगा। यह सब संविधान के अनुच्छेद 3 के तहत होगा। लोग लंबे समय से मांग कर रहे थे कि राज्य का नाम उसकी मलयालम भाषा के अनुसार हो। पहले अंग्रेजी और हिंदी में केरल लिखा जाता था लेकिन स्थानीय लोग इसे केरलम ही बोलते हैं। केंद्र सरकार का यह कदम राज्य की इच्छा को सम्मान देने वाला माना जा रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह फैसला राज्य की जनता की भावना को दिखाता है। नाम बदलने से सभी आधिकारिक दस्तावेजों में बदलाव होगा जैसे नक्शे, साइन बोर्ड, स्कूल और अस्पताल के नाम। कुछ लोग कहते हैं कि इसमें काफी खर्च आएगा लेकिन समर्थक मानते हैं कि सांस्कृतिक पहचान के लिए यह जरूरी है। केरल विधानसभा चुनाव जल्द आने वाले हैं इसलिए यह मुद्दा चर्चा में है लेकिन दोनों तरफ से समर्थन मिला है। यह बदलाव सिर्फ नाम का नहीं बल्कि भाषाई एकता का प्रतीक भी है। 1956 में जब भाषा के आधार पर राज्य बने तब भी ऐसी ही मांगें थीं। अब यह प्रक्रिया पूरी होने पर पूरे देश में केरलम नाम इस्तेमाल होगा। लोग खुश हैं कि उनकी मातृभाषा की आवाज मजबूत हो रही है। हालांकि कुछ प्रशासनिक चुनौतियां आएंगी लेकिन लंबे समय में यह राज्य की गरिमा बढ़ाएगा।

केरलम नाम का मतलब और भाषाई महत्व

केरलम नाम दो साधारण मलयालम शब्दों से मिलकर बना है। पहला शब्द केरा जिसका मतलब नारियल का पेड़ होता है और दूसरा अलम जिसका मतलब जमीन या भूमि है। इस तरह पूरा नाम बनता है नारियल की भूमि। केरल में हर तरफ नारियल के पेड़ दिखते हैं। समुद्र किनारे से लेकर पहाड़ों तक ये पेड़ फैले हुए हैं इसलिए नाम बिलकुल सही बैठता है। स्थानीय लोग रोजमर्रा की बातचीत में अपने राज्य को केरलम ही कहते हैं। लेकिन अंग्रेजी में यह केरल बन गया क्योंकि विदेशी उच्चारण में अंत का म खो गया। अब नाम बदलने से सब जगह एक जैसा लिखा और बोला जाएगा। यह बदलाव भाषाई सम्मान का बड़ा कदम है। मलयालम भारत की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषा है और लोग चाहते हैं कि राज्य का नाम भी उसी के अनुसार हो। पहले अंग्रेजों के समय में कई नाम बदल दिए गए थे लेकिन अब स्वतंत्र भारत में हम अपनी जड़ों को वापस पा रहे हैं। केरलम नाम इस्तेमाल करने से बच्चों को स्कूल में सही इतिहास सिखाना आसान होगा। विदेश में रहने वाले मलयाली लोग भी खुश हैं क्योंकि वे हमेशा से केरलम कहते आए हैं। यह नाम सिर्फ शब्द नहीं बल्कि राज्य की हरियाली और समृद्धि की कहानी कहता है। लोग कहते हैं कि नाम में छोटा सा म जोड़ने से उनकी पहचान मजबूत होगी। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि भाषा ही संस्कृति का आधार है इसलिए सही उच्चारण जरूरी है। यह बदलाव अन्य राज्यों को भी सोचने पर मजबूर कर सकता है कि वे अपनी मातृभाषा के नाम अपनाएं। कुल मिलाकर यह कदम लोगों को गर्व महसूस कराएगा और देश की विविधता को और खूबसूरत बनाएगा। नाम बदलने की प्रक्रिया में सभी भाषाओं में बदलाव होगा ताकि कोई भ्रम न रहे।

प्राचीन इतिहास और चेर वंश का संबंध

केरलम नाम बहुत पुराना है और इसका जिक्र 2300 साल पहले के इतिहास में मिलता है। सम्राट अशोक के शिलालेखों में इसे केरलपुत्र कहा गया है जो तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व का समय है। उस समय यहां चेर वंश का राज था। चेर राजाओं ने इस क्षेत्र पर शासन किया और उनका नाम चेरम से केरलम बना। चेर शब्द का मतलब गीली जमीन या मिट्टी का मैदान होता है जो इस इलाके की भौगोलिक स्थिति से मेल खाता है। प्राचीन काल में केरलम मसालों का बड़ा केंद्र था। काली मिर्च, दालचीनी और अदरक यहां से रोमन देशों तक जाते थे। व्यापारी समुद्र के रास्ते आते थे और यही वजह है कि कालीकट बंदरगाह प्रसिद्ध हुआ। 1498 में वास्को डी गामा यहीं उतरा था। चेर वंश के राजा कलिंग और अन्य राज्यों से संबंध रखते थे। पुराने ग्रंथों और शिलालेखों में इस नाम का बार बार उल्लेख है जो साबित करता है कि केरलम कोई नया नाम नहीं बल्कि मूल नाम है। इतिहासकार कहते हैं कि भाषाई बदलाव के साथ चेरालम से केरलम हो गया। स्वतंत्रता संग्राम में भी मलयालम बोलने वाले एक राज्य की मांग थी। 1956 में जब राज्य बना तब त्रावणकोर, कोचीन और मालाबार को मिलाया गया लेकिन नाम केरल रखा गया। अब लोग कहते हैं कि मूल नाम वापस लाना सही है। यह नाम राज्य की व्यापारिक और सांस्कृतिक विरासत को याद दिलाता है। प्राचीन मंदिर और किले आज भी इस इतिहास की गवाही देते हैं। नाम बदलाव से स्कूल के पाठ्यक्रम में यह जानकारी और स्पष्ट होगी। लोग गर्व से कह सकेंगे कि हमारा राज्य 2000 साल से केरलम है। यह बदलाव सिर्फ कागजों पर नहीं बल्कि दिलों में भी एकता लाएगा।

परशुराम कथा और लोक मान्यताएं

केरलम नाम की एक रोचक कथा परशुराम से जुड़ी है जो हिंदू पुराणों में मिलती है। भगवान विष्णु के छठे अवतार परशुराम ने क्षत्रियों के अत्याचार से तंग आकर अपना फरसा समुद्र में फेंका। समुद्र पीछे हट गया और नई जमीन निकली जिसे परशुराम ने बसाया। इस भूमि को परशुराम क्षेत्र भी कहते हैं। कुछ मान्यताओं में नाम इसी घटना से जुड़ा माना जाता है जहां समुद्र से निकली भूमि को केरलम कहा गया। लोक कथाओं में यह बताया जाता है कि परशुराम ने ब्राह्मणों को बसाने के लिए यह जमीन बनाई। आज भी ओणम त्योहार में लोग इस कथा को याद करते हैं और फूलों से सजावट करते हैं। हालांकि यह पौराणिक कहानी है लेकिन यह राज्य की प्राकृतिक सुंदरता को दर्शाती है। समुद्र, नदियां, पहाड़ और नारियल के पेड़ सब इस कथा को जीवंत बनाते हैं। लोग मानते हैं कि इस भूमि का जन्म दिव्य है इसलिए इसे भगवान की अपनी भूमि कहते हैं। नाम केरलम इस कहानी को भी सम्मान देता है। पुराने ग्रंथ जैसे केरल महात्म्य में भी इसकी चर्चा है। आधुनिक समय में वैज्ञानिक मानते हैं कि यह क्षेत्र भूगर्भीय बदलाव से बना लेकिन लोक कथाएं भावनात्मक जुड़ाव बनाती हैं। नाम बदलाव से ऐसी कहानियां और मजबूत होंगी। बच्चे स्कूल में पढ़ेंगे कि हमारी भूमि की उत्पत्ति कैसे हुई। यह कथा राज्य को एकता का संदेश भी देती है। अलग अलग समुदाय एक साथ रहते हैं और इस विरासत को साझा करते हैं। परशुराम कथा सिर्फ धार्मिक नहीं बल्कि सांस्कृतिक धरोहर है जो नाम के साथ जुड़ी है। बदलाव के बाद पर्यटक भी इस कहानी को और उत्सुकता से जानेंगे। कुल मिलाकर यह नाम राज्य की आत्मा को छूता है।

नाम बदलाव के मायने और संभावित प्रभाव

नाम केरल से केरलम करने का मतलब है अपनी जड़ों को मजबूत करना। यह छोटा सा बदलाव राज्य की भाषाई पहचान को पूरे देश में स्थापित करेगा। लोग कहते हैं कि अब हर दस्तावेज में सही नाम होगा तो गलतफहमी कम होगी। विदेशी पर्यटक और निवासी भी केरलम नाम को आसानी से समझेंगे। लागत की बात करें तो साइन बोर्ड, सरकारी कागजात और कंप्यूटर रिकॉर्ड बदलने में करोड़ों रुपये लग सकते हैं लेकिन कई राज्य पहले ऐसा कर चुके हैं जैसे उड़ीसा से ओडिशा। फायदा यह होगा कि सांस्कृतिक गौरव बढ़ेगा और युवा अपनी भाषा पर गर्व करेंगे। पश्चिम बंगाल जैसे अन्य राज्य भी नाम बदलने की मांग करते रहे हैं लेकिन केरल का मामला जल्दी मंजूर हो गया। यह दिखाता है कि केंद्र और राज्य के बीच अच्छा तालमेल है।

चुनाव के समय यह मुद्दा लोगों को जोड़ेगा लेकिन असल में यह लंबे समय की मांग है। असर यह होगा कि पर्यटन उद्योग को बढ़ावा मिलेगा क्योंकि नया नाम चर्चा में रहेगा। शिक्षा में पाठ्य पुस्तकें अपडेट होंगी। नौकरियों और बैंक खातों में नाम बदलाव के लिए समय लगेगा लेकिन सरकार प्लान बनाएगी। कुछ लोग चिंता करते हैं कि पुराने नाम की यादें मिट जाएंगी लेकिन असल में केरलम पुराना नाम ही है। यह कदम भारत की एकता में विविधता को बढ़ावा देगा। अंत में लोग कहेंगे कि केरलम हमारा घर है। यह बदलाव सोचने पर मजबूर करता है कि नाम सिर्फ शब्द नहीं बल्कि भावनाओं का प्रतीक है। भविष्य में यह केरल को और मजबूत पहचान देगा।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

ग्रहण की छाया में रंगों का पर्व

इस बार होली की तिथियों को लेकर क्यों बना असमंजस

@ आनंद मीणा

होली का नाम आते ही मन में रंगों की उड़ती फुहार, ढोल की थाप और मोहल्लों में गूंजती हंसी की आवाजें जीवंत हो उठती हैं। लेकिन इस बार रंगों के इस उत्सव से पहले लोगों के मन में एक अलग तरह का सवाल है-आखिर होलिका दहन कब होगा और रंगों की होली किस दिन खेली जाएगी ?देश के कई हिस्सों में 2 मार्च और 3 मार्च को लेकर भ्रम की स्थिति बनी हुई है। कहीं लोग 2 मार्च को होलिका दहन की तैयारी कर रहे हैं तो कहीं 3 मार्च को लेकर चर्चा है। इसी तरह रंग खेलने की तारीख को लेकर भी अलग-अलग मत सामने आए। इस उलझन को सुलझाने के लिए छत्तीसगढ़ की राजधानी में ज्योतिष विद्वानों से चर्चा की गई, जिसके बाद तस्वीर काफी हद तक साफ हुई।

इस वर्ष होली का क्रम कुछ अलग रहेगा

2-3 मार्च की मध्यरात्रि: होलिका दहन

3 मार्च: चंद्रग्रहण और सूतक

4 मार्च: रंगों की होली

ज्योतिष गणना के अनुसार यह स्थिति विरल मानी जा रही है, क्योंकि सामान्य वर्षों में होलिका दहन और रंगोत्सव के बीच इतना अंतर नहीं होता।

पंचांग की गणना से शुरू हुआ भ्रम

भारतीय परंपरा में त्योहार केवल तारीख देखकर नहीं, बल्कि तिथि, नक्षत्र और विशेष योग देखकर तय किए जाते हैं। होलिका दहन भी ऐसा ही पर्व है, जिसे पूर्णिमा तिथि में सूर्यास्त के बाद और भद्राकाल समाप्त होने पर करने का विधान बताया गया है।ज्योतिषाचार्यों के अनुसार इस वर्ष 2 मार्च की शाम लगभग 5:45 बजे से भद्राकाल प्रारंभ हो रहा है, जो 3 मार्च सुबह 5:23 बजे तक रहेगा। भद्रा काल को शुभ कार्यों के लिए वर्जित माना जाता है। यही कारण है कि सामान्य तौर पर 2 मार्च की शाम को होलिका दहन करना शास्त्र सम्मत नहीं माना जा रहा।यही वह बिंदु है जहां से लोगों में भ्रम शुरू हुआ। क्योंकि पूर्णिमा तिथि 2 मार्च को है, लेकिन भद्रा भी उसी समय लग रही है। ऐसे में विद्वानों ने मध्यरात्रि का समय उपयुक्त बताया है। यानी 2 और 3 मार्च की रात के बीच का समय होलिका दहन के लिए सबसे सही माना जा रहा है।

चंद्रग्रहण ने और बढ़ाई चर्चा

इस बार होली का गणित केवल भद्राकाल तक सीमित नहीं है। 3 मार्च को चंद्रग्रहण भी लग रहा है, जिसने पूरे विषय को और रोचक बना दिया है।ज्योतिष विशेषज्ञों के अनुसार चंद्रग्रहण दोपहर 3:21 बजे से शाम 6:47 बजे तक प्रभावी रहेगा। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार ग्रहण से लगभग 9 घंटे पहले सूतक काल शुरू हो जाता है। इस आधार पर 3 मार्च की सुबह लगभग 6:21 बजे से सूतक प्रभावी रहेगा।सूतक लगते ही मंदिरों के कपाट बंद करने, पूजा-पाठ रोकने और भोजन को ढककर रखने की परंपरा है। कई घरों में इस समय तुलसी के पत्ते भोजन में डालने की परंपरा भी निभाई जाती है।

रंगों की होली क्यों टली एक दिन आगे

आमतौर पर होलिका दहन के अगले दिन धुलेंडी यानी रंगों की होली खेली जाती है। लेकिन इस बार ग्रहण के कारण यह क्रम बदल गया है।ज्योतिषाचार्यों का कहना है कि सूतक और ग्रहण के प्रभाव के दौरान रंग खेलना शुभ नहीं माना जाता। इसलिए 3 मार्च को रंगों की होली नहीं खेलने की सलाह दी गई है।ग्रहण समाप्त होने के बाद स्नान और शुद्धिकरण का विधान है। इसके बाद अगले दिन यानी 4 मार्च को रंगों की होली खेली जाएगी।

शेयर बाजार की छुट्टी ने भी बढ़ाया भ्रम

दिलचस्प बात यह है कि 3 मार्च को शेयर बाजार में होली की छुट्टी घोषित होने से भी लोगों के बीच चर्चा बढ़ गई। कई लोगों ने मान लिया कि उसी दिन रंगों की होली होगी, जबकि धार्मिक गणना कुछ अलग संकेत दे रही थी।त्योहारों के समय अक्सर यही स्थिति बनती है, जब प्रशासनिक कैलेंडर और धार्मिक पंचांग अलग-अलग आधार पर चलते हैं।

होलिका दहन की परंपरा में छिपा सामाजिक संदेश

होलिका दहन केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने वाला उत्सव भी है। गांवों और शहरों में लोग कई दिन पहले से लकड़ियां इकट्ठा करते हैं। बच्चे उत्साह से चंदा मांगते हैं और महिलाएं पूजा की तैयारी करती हैं।होलिका दहन की रात जब अग्नि प्रज्वलित होती है, तो लोग उसकी सात परिक्रमा करते हैं। मान्यता है कि इससे नकारात्मक ऊर्जा समाप्त होती है और परिवार में सुख-समृद्धि आती है।कई बुजुर्ग बताते हैं कि पहले होलिका दहन केवल पूजा नहीं, बल्कि सामुदायिक संवाद का माध्यम भी था। लोग आपसी मतभेद भूलकर एक साथ बैठते थे। यही कारण है कि इस पर्व को सामाजिक सौहार्द का प्रतीक माना जाता है।

होलिका की राख का धार्मिक महत्व

होलिका दहन के बाद अग्नि की राख को शुभ माना जाता है। लोग इसे घर लाकर सुरक्षित स्थान पर रखते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी खेतों में राख डालने की परंपरा देखी जाती है।मान्यता है कि इससे नकारात्मकता दूर होती है और सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। हालांकि विद्वान यह भी कहते हैं कि इसे आस्था के भाव से ही ग्रहण करना चाहिए।

ग्रहण के बाद दान का विशेष महत्व

धार्मिक ग्रंथों में ग्रहण के बाद स्नान और दान को विशेष फलदायी बताया गया है। कई लोग ग्रहण समाप्त होने के बाद गरीबों को अन्न, वस्त्र या धन का दान करते हैं।मान्यता है कि इससे मानसिक शुद्धि के साथ-साथ आध्यात्मिक संतुलन भी प्राप्त होता है।आज के समय में जब त्योहार धीरे-धीरे औपचारिक होते जा रहे हैं, ऐसे अनुष्ठान लोगों को अपनी जड़ों से जोड़ते हैं।

बदलते समय में भी कायम है आस्था

तेज रफ्तार जिंदगी में त्योहार अब पहले जैसे नहीं रहे, लेकिन आस्था आज भी उतनी ही मजबूत है। लोग सोशल मीडिया पर तिथियां खोजते हैं, पंचांग ऐप देखते हैं और फिर भी अंतिम निर्णय के लिए किसी विद्वान या परिवार के बुजुर्ग से सलाह लेते हैं।यही भारतीय परंपरा की खूबसूरती है-जहां आधुनिकता और परंपरा साथ चलती हैं।इस बार होली की तिथियों को लेकर बना भ्रम भी कहीं न कहीं इसी परंपरा की गहराई को दिखाता है। क्योंकि जब लोग सही समय जानने के लिए उत्सुक होते हैं, तो इसका अर्थ है कि त्योहार केवल रंगों का खेल नहीं, बल्कि विश्वास का उत्सव भी है।इस वर्ष होली केवल रंगों का पर्व नहीं, बल्कि धैर्य और अनुशासन का संदेश भी दे रही है। भद्राकाल, ग्रहण और सूतक जैसे योगों ने लोगों को यह याद दिलाया है कि भारतीय त्योहार केवल उत्साह नहीं, बल्कि समय और परंपरा का संतुलन भी हैं।जब 4 मार्च को रंग उड़ेंगे, तो उनमें केवल गुलाल ही नहीं होगा, बल्कि उस इंतजार की खुशी भी होगी जो इस बार पूरे देश ने महसूस की है।

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

भारत श्री

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

सोमवार, 02 मार्च 2026 , विक्रम संवत 2080

होली से पहले आई सियासी खुशी

आज भारत का अधिकांश हिंदू बहुत प्रसन्न है उसे ऐसा लगता है की ठीक समय पर होली का पारितोषिक मिल गया है। क्योंकि होली के 1 दिन पहले इतना शुभ समाचार आमतौर पर नहीं मिल पाता है। भारत के आम हिंदुओं को इस बात से मतलब नहीं है कि ईरान के सर्वोच्च नेता खामनेई मारे गए इस बात से भी मतलब नहीं है कि अमेरिका और इजरायल ने खामनेई को मार दिया है भारत के हिंदुओं को तो प्रसन्नता सिर्फ इस बात से होती है कि पाकिस्तान रो रहा है नेहरू परिवार के घर में खाना नहीं बन रहा है भारत के मुसलमान के चेहरे पर मायूसी है अवश्य ही कोई ना कोई होली के अवसर पर अच्छी घटना हुई होगी जिसके कारण पाकिस्तान भारतीय मुसलमान और नेहरू परिवार एक साथ रो रहे हैं। यदि भारत के हिंदुओं से इस विषय में विस्तार से पूछा जाए तो अधिकांश लोग इसका कोई कारण नहीं बता सकेंगे वह तो सिर्फ पाकिस्तान और नेहरू परिवार की प्रतिक्रिया से ही इस बात को समझ रहे हैं और उनके घर में होली की अच्छी-अच्छी मिठाइयां बन रही हैं मैं भी इस बात से बहुत प्रसन्न हूं की होली के शुभ अवसर पर अमेरिका और इजरायल ने भारत को एक शुभ समाचार दिया है। इस शुभ कार्य के करने में नरेंद्र मोदी की भी कोई भूमिका रही है या नहीं रही है यह बात तो अब तक सामने नहीं आई है लेकिन चुकी नरेंद्र मोदी एक दिन पहले ही इजराइल में जाकर कुछ गुप्त बातें किए थे इसलिए यदि नरेंद्र मोदी ने इसमें कोई भूमिका अदा की हो तो इसके लिए हमें नरेंद्र मोदी को भी धन्यवाद देना चाहिए।

ज्ञानेंद्र आर्य

युद्ध की आहट और अर्थव्यवस्था पर खतरा

@ **अनुराग पाठक**

पश्चिम एशिया में बढ़ता सैन्य तनाव अब केवल क्षेत्रीय राजनीति का मुद्दा नहीं रह गया है, बल्कि इसका असर वैश्विक अर्थव्यवस्था पर साफ दिखाई देने लगा है। विशेष रूप से तेल आपूर्ति से जुड़े समुद्री मार्गों पर खतरे की आशंका ने दुनिया भर के बाजारों में अस्थिरता पैदा कर दी है। ईरान और इजराइल के बीच बढ़ते टकराव तथा अमेरिका की सक्रिय भूमिका ने ऊर्जा बाजार को संवेदनशील बना दिया है। इसका सीधा प्रभाव भारत जैसे आयात-निर्भर देशों पर पड़ना तय माना जा रहा है।

वैश्विक तेल व्यापार का एक बड़ा हिस्सा होर्मुज जलडमरूमध्य से होकर गुजरता है। यदि किसी भी कारण से इस मार्ग पर बाधा आती है, तो अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की आपूर्ति प्रभावित होगी और कीमतों में तेज उछाल आ सकता है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि वर्तमान स्तर से तेल 100 से 120 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच सकता है। भारत अपनी कुल जरूरत का लगभग 85 से 90 प्रतिशत कच्चा तेल आयात करता है, इसलिए अंतरराष्ट्रीय कीमतों में हर वृद्धि सीधे घरेलू महंगाई को प्रभावित करती है।भारत में पेट्रोल और डीजल की कीमतें केवल बाजार के उतार-चढ़ाव से तय नहीं होतीं, बल्कि इसमें कर संरचना और सरकारी नीति की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हालांकि तेल कंपनियां अंतरराष्ट्रीय दरों के आधार पर मूल कीमत तय करती हैं, लेकिन उपभोक्ताओं तक पहुंचने वाली अंतिम कीमत में केंद्र और राज्य सरकारों के कर शामिल होते हैं। ऐसे में युद्ध जैसी अस्थिर परिस्थितियों में सरकार को संतुलन बनाना पड़ता है ताकि महंगाई नियंत्रण में रहे और राजकोषीय दबाव भी न बढ़े।

तेल के साथ-साथ सोने की कीमतों पर भी युद्ध का असर दिखाई देता है। इतिहास बताता है कि वैश्विक संकट के समय निवेशक सुरक्षित निवेश विकल्प की ओर झुकते हैं और सोना सबसे भरोसेमंद साधन माना जाता है। यही कारण है कि मौजूदा तनाव के बीच सोने की कीमतों में तेज वृद्धि की संभावना जताई जा रही है। यदि यह रुझान जारी रहता है, तो घरेलू बाजार में सोना नए रिकॉर्ड स्तर तक पहुंच सकता है। इसका असर शादी-विवाह और आभूषण उद्योग पर भी पड़ेगा।

शेयर बाजार भी इस तरह के भू-राजनीतिक संकटों से अछूता नहीं रहता। अनिश्चितता बढ़ने पर विदेशी निवेशक जोखिम कम करने के लिए पूंजी निकालने लगते हैं, जिससे बाजार में गिरावट का माहौल बनता है। हाल के वर्षों में यह कई बार देखा गया है कि युद्ध या वैश्विक तनाव की खबरों के साथ ही बाजार में अचानक उतार-चढ़ाव बढ़ जाता है। यदि स्थिति लंबी खिंचती है, तो इसका असर उद्योग, निवेश और रोजगार पर भी पड़ सकता है।भारत के लिए चुनौती केवल तेल कीमतों तक सीमित नहीं है। ऊर्जा सुरक्षा के साथ-साथ आपूर्ति स्रोतों का विविधीकरण भी उतना ही महत्वपूर्ण है। पिछले कुछ वर्षों में भारत ने खाड़ी देशों के अलावा अन्य देशों से भी तेल आयात बढ़ाने की कोशिश की है। इसके साथ ही रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार को मजबूत करने पर भी जोर दिया गया है ताकि आपात स्थिति में कुछ समय तक घरेलू जरूरतें पूरी की जा सकें। यह कदम भविष्य की संभावित चुनौतियों को देखते हुए आवश्यक माना जा रहा है।

इस पूरे परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण पहलू वैश्विक शक्ति संतुलन का भी है। पश्चिम एशिया लंबे समय से राजनीतिक और सामरिक प्रतिस्पर्धा का केंद्र रहा है। यहां होने वाली हर हलचल का प्रभाव ऊर्जा बाजार के माध्यम से दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं तक पहुंचता है। विशेष रूप से चीन जैसे बड़े आयातक देशों की रणनीति भी बाजार की दिशा तय करती है। यदि प्रमुख आयातक देश वैकल्पिक व्यवस्था करने लगते हैं, तो व्यापारिक समीकरण तेजी से बदल सकते हैं।

वर्तमान परिस्थितियां यह संकेत देती हैं कि वैश्विक अर्थव्यवस्था पहले से कहीं अधिक परस्पर जुड़ी हुई है। किसी एक क्षेत्र में युद्ध या तनाव का असर हजारों किलोमीटर दूर स्थित देशों की आम जनता तक पहुंच जाता है। भारत में बढ़ती ईंधन कीमतें केवल परिवहन लागत ही नहीं बढ़ातीं, बल्कि खाद्य पदार्थों से लेकर रोजमर्रा के सामान तक महंगाई का दबाव पैदा करती हैं।ऐसे समय में सबसे जरूरी है संतुलित नीति और दीर्घकालिक तैयारी। ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों, नवीकरणीय ऊर्जा और आयात विविधीकरण पर जोर देकर ही भविष्य के संकटों को कम किया जा सकता है। वैश्विक तनाव कब समाप्त होगा यह कहना कठिन है, लेकिन यह स्पष्ट है कि आर्थिक स्थिरता अब केवल घरेलू नीति से नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों से भी तय होगी। यही कारण है कि वर्तमान घटनाक्रम को केवल युद्ध की खबर के रूप में नहीं, बल्कि आर्थिक चेतावनी के रूप में भी देखा जाना चाहिए।

जुबानी तीर

अदालत के फैसले ने साफ कर दिया है कि सच्चाई परेशान हो सकती है, पराजित नहीं। महीनों से मेरे खिलाफ झूठा नैरेटिव बनाया गया, लेकिन न्याय व्यवस्था पर मेरा भरोसा कायम है। मैं जनता के मुद्दों को पहले से ज्यादा मजबूती से उठाता रहूंगा।

अरविंद केजरीवाल (पूर्व मुख्यमंत्री, दिल्ली)

केजरीवाल के बाहर आने से दिल्ली की राजनीति में कोई बड़ा फर्क नहीं पड़ता। इससे यह सवाल जरूर खड़ा होता है कि आम आदमी पार्टी और भाजपा के बीच अंदरखाने क्या समझ है। जनता सब देख रही है और सच्चाई समय के साथ सामने आएगी।

संदीप दीक्षित (कांग्रेस)

केजरीवाल को अदालत से जो भी राहत मिली हो, उससे उनके खिलाफ लगे गंभीर सवाल खत्म नहीं हो जाते। वे बार-बार न्यायिक संस्थाओं पर सवाल उठाकर दबाव बनाने की कोशिश करते हैं। कानून अपना काम कर रहा है और करेगा।

प्रवीण शंकर कपूर (भाजपा)

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. महिमा मक्कर द्वारा एच0टी0 मीडिया, प्लॉट नं. 8, उद्योग विहार, ग्रेटर नोएडा-9 उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं जी. एफ. 5/115, गली नं. 5 संत निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 से प्रकाशित । संपादकः महिमा मक्कर, RNI No. DELHI/2019/77252, संपर्क 011-43563154

विज्ञापन एवं वार्षिक सब्सक्रिप्शन के लिए ऑफिस के पते पर सम्पर्क करें या फिर इन नम्बरों - 9667793987 या 9667793985 पर बात करें या इस पर media@ bharatshri.com ईमेल करें।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

होली पर घर में बनाएं आयुर्वेदिक रंग, त्वचा भी सुरक्षित और परंपरा भी जीवित

होली रंगों का त्योहार है। यह केवल उत्सव नहीं, बल्कि प्रकृति और प्रेम का प्रतीक माना जाता है। पहले के समय में होली के रंग घरों में ही बनाए जाते थे। टेसू के फूल, हल्दी, चंदन और फूलों की पंखुड़ियों से तैयार रंग त्वचा को नुकसान नहीं पहुंचाते थे, बल्कि कई बार त्वचा के लिए लाभकारी भी होते थे। समय बदला और बाजार में मिलने वाले रासायनिक रंगों ने प्राकृतिक रंगों की जगह ले ली। इन रंगों में तेज रसायन होने के कारण त्वचा रोग, एलर्जी, आंखों में जलन और बालों के नुकसान जैसी समस्याएं बढ़ने लगीं।अब फिर से लोग आयुर्वेदिक और प्राकृतिक रंगों की ओर लौट रहे हैं। घर पर बने रंग न केवल सुरक्षित होते हैं, बल्कि सस्ते और पर्यावरण के अनुकूल भी होते हैं। आयुर्वेद में रंगों को केवल सजावट नहीं, बल्कि शरीर और मन के संतुलन से भी जोड़ा गया है।

प्राकृतिक रंग क्यों जरूरी हैं

रासायनिक रंगों में सीसा, क्रोमियम और अन्य हानिकारक तत्व मिलाए जाते हैं। ये तत्व त्वचा के रोमछिद्रों में जाकर जलन, खुजली और चकत्ते पैदा कर सकते हैं। कई बार आंखों और श्वसन तंत्र पर भी बुरा असर पड़ता है। दूसरी ओर प्राकृतिक रंग फूलों, फलों और जड़ी-बूटियों से बनाए जाते हैं, जिनमें औषधीय गुण भी होते हैं।आयुर्वेद के अनुसार त्वचा शरीर का महत्वपूर्ण अंग है और इसे सुरक्षित रखना जरूरी है। प्राकृतिक रंग त्वचा को पोषण देते हैं और शरीर में शीतलता बनाए रखते हैं।

घर पर ऐसे बनाएं पीला रंग

पीला रंग उत्साह और ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है। इसे बनाने का सबसे आसान तरीका हल्दी है।

विधि

हल्दी पाउडर में थोड़ा बेसन या आटा मिलाकर हल्का पीला सूखा रंग तैयार किया जा सकता है। यदि गीला रंग बनाना हो तो हल्दी को पानी में घोल लें। यह त्वचा के लिए लाभकारी होता है और चमक भी बढ़ाता है।

हल्दी में जीवाणुरोधी गुण होते हैं, जिससे त्वचा संक्रमण से बचती है।

लाल रंग बनाने का आसान तरीका

लाल रंग प्रेम और उल्लास का प्रतीक है। इसे चुकंदर और गुड़हल के फूलों से बनाया जा सकता है।

विधि

चुकंदर को छोटे टुकड़ों में काटकर पानी में उबाल लें। पानी ठंडा होने पर गहरा लाल रंग तैयार हो जाएगा। सूखा रंग बनाने के लिए चुकंदर को सुखाकर पीस लें।

इसी तरह गुड़हल के सूखे फूलों को पीसकर भी लाल रंग बनाया जा सकता है।

यह रंग त्वचा को ठंडक देता है और जलन से बचाता है।

हरा रंग बनाने का प्राकृतिक तरीका

हरा रंग प्रकृति और संतुलन का प्रतीक माना जाता है।

विधि

मेहंदी पाउडर में थोड़ा आटा मिलाकर सूखा हरा रंग तैयार किया जा सकता है। ध्यान रखें कि मेहंदी शुद्ध हो और उसमें कोई रसायन न मिला हो।

पालक या नीम की पत्तियों को पीसकर भी गीला हरा रंग बनाया जा सकता है।

नीम और पालक त्वचा के लिए लाभकारी माने जाते हैं और संक्रमण से बचाते हैं।

केसरिया और नारंगी रंग ऐसे बनाएं

नारंगी रंग बनाने के लिए टेसू या गेंदे के फूल सबसे बेहतर माने जाते हैं।

विधि

गेंदे या टेसू के फूलों को पानी में रात भर भिगो दें। सुबह पानी गहरा केसरिया हो जाएगा।

सूखा रंग बनाने के लिए फूलों को सुखाकर पीस लें।

यह रंग त्वचा को ठंडक देता है और बालों के लिए भी सुरक्षित होता है।

नीला रंग भी बन सकता है प्राकृतिक

बहुत कम लोग जानते हैं कि नीला रंग भी घर पर बनाया जा सकता है।

विधि

नील के पौधे की पत्तियों या जामुन के छिलकों को पानी में उबालकर हल्का नीला रंग तैयार किया जा सकता है।

सूखे जामुन के छिलकों को पीसकर भी रंग बनाया जा सकता है।

यह रंग त्वचा को नुकसान नहीं पहुंचाता।

आयुर्वेदिक रंगों के स्वास्थ्य लाभ

प्राकृतिक रंग केवल सुरक्षित ही नहीं होते, बल्कि कई तरह से लाभकारी भी होते हैं।

हल्दी त्वचा को चमकदार बनाती है।

नीम त्वचा संक्रमण से बचाता है।

चंदन त्वचा को ठंडक देता है।

गुलाब त्वचा को मुलायम बनाता है।

गुड़हल बालों के लिए लाभकारी माना जाता है।

इस तरह होली का त्योहार त्वचा की देखभाल का अवसर भी बन सकता है।

रंग खेलने से पहले रखें ये सावधानियां

होली खेलने से पहले शरीर पर सरसों या नारियल का तेल लगाना चाहिए। इससे रंग त्वचा पर चिपकता नहीं और आसानी से निकल जाता है।

आंखों और होंठों को बचाने के लिए हल्का मॉइस्चर या घी लगाया जा सकता है।

बहुत तेज धूप में लंबे समय तक रंग खेलने से बचना चाहिए।

बच्चों के लिए खास ध्यान

बच्चों की त्वचा बहुत संवेदनशील होती है। इसलिए उनके लिए केवल प्राकृतिक रंग ही इस्तेमाल करने चाहिए। बाजार के चमकीले रंगों से बचना जरूरी है।

घर में बने रंग बच्चों के लिए पूरी तरह सुरक्षित रहते हैं।

पर्यावरण के लिए भी बेहतर हैं प्राकृतिक रंग

रासायनिक रंग पानी और मिट्टी को प्रदूषित करते हैं। होली के बाद यही रंग नालियों और नदियों में पहुंच जाते हैं। इससे जलजीवों को नुकसान होता है।

प्राकृतिक रंग पूरी तरह जैविक होते हैं और पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुंचाते।

आज जब प्रदूषण बड़ी समस्या बन चुका है, तब प्राकृतिक रंगों का उपयोग पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक छोटा लेकिन महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।

परंपरा की ओर लौटने का समय

होली केवल रंगों का खेल नहीं, बल्कि रिश्तों का त्योहार है। पहले लोग घरों में रंग बनाते थे, साथ बैठकर पकवान बनते थे और पूरे मोहल्ले में अपनापन दिखाई देता था। प्राकृतिक रंग उस संस्कृति का हिस्सा थे जिसमें प्रकृति और मनुष्य का गहरा संबंध था।आज जरूरत है कि हम उसी परंपरा को फिर से अपनाएं। घर पर बने आयुर्वेदिक रंग न केवल सुरक्षित हैं, बल्कि त्योहार को अधिक अर्थपूर्ण भी बनाते हैं।जब रंग फूलों से बनते हैं तो खुशबू भी साथ आती है, और जब रंग प्रकृति से बनते हैं तो त्योहार में शुद्धता भी शामिल होती है।होली का असली आनंद तभी है जब रंग चेहरे पर ही नहीं, जीवन में भी खुशियां भर दें। इस बार होली पर बाजार के रासायनिक रंगों से दूरी बनाकर घर में बने आयुर्वेदिक रंगों से त्योहार मनाएं। इससे त्वचा भी सुरक्षित रहेगी, पर्यावरण भी और हमारी परंपरा भी।

सम्राट हितहरिवंश जी की दिव्य रसिक लीला

वृन्दावन दास चाचा के शब्दों में हितहरिवश रसिक मुकुटमणि थे। हितहरिवंश जी के प्राकट्य काल में देश की राजनैतिक स्थिति बिगड़ती सी जा रही थी। दिल्ली में हुमायू का आधिपत्य था। सूरी वंश केंद्र में पठान प्रभुता स्थापित करने के लिए उत्सुक था। प्रांतीय प्रशासकों की स्वाधीन मनोवृत्ति बादशाही का सपना देख रही थी। धार्मिक क्षेत्र में खास करके भक्ति क्षेत्र में कबीर द्वारा प्रतिपादित और नानक द्वारा समर्थित निर्गुण ज्ञान धारा संत ज्ञान धारा के साथ ही साथ वैष्णव आचार्यों द्वारा निर्धारित सगुण भक्ति का अविच्छिन्न प्रवाह चल रहा था। नवद्वीप के चैतन्य और दक्षिण के वल्लभ श्रीकृष्ण रस की व्याख्या के लिए प्रकट हो चुके थे। साहित्य के क्षेत्र में सूफी संत जायसी पद्मावत की रचना में आत्मा परमात्मा का प्रेम संबंध सिद्ध कर रहे थे। ऐसे ऐतिहासिक समय में महात्मा हितहरिवंश का भगवद रस सागर में जीवमात्र को निमग्न करने के लिए प्राकट्य हुआ। लोकमात्र जीवमात्र के सम्मुख उन्होंने कामना की कि निकुंजनव नागरी केलिप्रिय रसिक शेखर से वृंदावन प्राणमय है वे मुझे अपनी प्रियतमा राधारानी के रसमय चरण कमल में शरण देने की कृपा करें। यह समय राजनीति में उथल पुथल भरा था लेकिन भक्ति की धाराएं लगातार बह रही थीं और ठीक उसी पावन वातावरण में उनका प्राकट्य हुआ जो सबको रस सागर में डुबोने वाला था।

हितहरिवंश जी का जन्म और परिवार

उनका जन्म मथुरा के निकट वाद ग्राम में सम्वत 1556 विक्रमी वैशाख शुक्ला एकादशी को परम पवित्र ब्राह्मण कुल में हुआ था। उनके पिता व्यासमिश्र महान धर्मनिष्ठ और भगवद कृपापात्र थे। माता तारादेवी भी बड़ी सती साध्वी थी। माता पिता के पवित्र पुण्य के पुंज रूप हितहरिवंश जी महाराज थे। सारा परिवार उनको प्यार करता था। हितकथामृततरगिणी के एक प्रसंग से पता चलता है कि उनके जन्म की अलौकिकता से आकृष्ट होकर दिल्लीश्वर हुमायूं ने शिशु रूप में उनका दर्शन किया था और अपने को परम कृतार्थ माना था। निस्संदेह वे दिव्य शिशु थे। श्री राधारानी के जन्म जन्मांतर के नित्य भक्त थे। शिशु काल में राधा नाम सुनकर वे किलकारी मार कर हंसने लगते थे। ऐसी मान्यता है कि छ महीने की अवस्था में उन्होंने राधासुधानिधि के स्तोत्रों का पाठ किया था उस समय उनके ताऊ नृसिंहाश्रम स्वामी सौभाग्य से उनके निकट थे। वे शिशु के मुख से सरस स्तवन सुनकर आश्चर्य चकित हो गए। उन्होंने समस्त श्लोक लिख लिए। माता पिता ने उनके लालन पालन में किसी भी प्रकार की कमी नहीं रखी। पूरा परिवार उनके दिव्य स्वभाव से मुग्ध रहता था और उनका पालन पोषण बड़े प्रेम से होता था।

अद्भुत शैशव चमत्कार

एक दिन प्रात काल श्री हरिवश जी अपने उपवन में कुछ समवयस्कों के साथ बाल क्रीड़ा में रत थे। राधा कृष्ण में उनकी चित्तवृत्ति निरंतर लगी रहती थी। उन्होंने दो गोरे और काले बालकों में राधा कृष्ण की भावना की उनको सज्जित कर खेलने लगे। कभी राधा को कृष्ण के और कभी कृष्ण को राधा के स्थान पर बिठा देते थे। ठीक इसी समय उनके पिता जो राधा कृष्ण के बड़े भक्त थे अपने आराध्य श्री विग्रहों का श्रृंगार कर ध्यानस्थ थे। ध्यान भंग होने पर देखा कि राधा के स्थान पर कृष्ण है और कृष्ण के स्थान पर राधा है सोचा कि श्रृंगार करने में भूल हो गई पर क्षण

हितहरिवंश जी का प्राकट्य काल

मात्र में दृश्य फिर बदल गया। वे आश्चर्य में पड़ गए। घर के बाहर आकर उन्होंने उपवन में देखा कि हितहरिवश रूप बदलने का खेल खेल रहे हैं उन्होंने अपने भाग्य की सराहना की और अपने आत्मज की सिद्ध भगवद भक्ति से आनंदमग्न हो गए। इसी प्रकार एक दिन हितहरिवश के पिता ने प्रभात काल में ठाकुर जी का श्रृंगार कर लड्डू का भोग रखा उन्होंने तत्काल ही थाली के निकट दोनों में रखे फल फूल भी देखे। उन्हें इस घटना ने आश्चर्य चकित कर दिया। वे घर से बाहर आकर उपवन की ओर दौड़ पड़े देखा हितहरिवश ने दो वृक्षों में राधा कृष्ण की भावना कर दोनों में फल फूल का भोग लगाया है। रहस्य उनकी समझ में आ गया। इस प्रकार नित्य प्रति हितहरिवश की युगल रूप माधुरी में अनुरक्ति और भक्ति बढ़ती गई वे सदा राधा के रूप सागर के अतल तल पर स्थिर रहने लगे। उनकी बाह्याकारिता अंतर की रसमयता में रूपांतरित हो गई। उनका अधिकांश समय एकांत में बीतने लगा। धीरे धीरे वे पांच साल के हो गए। लोग उन्हें बहुत मानते थे।

कुएं का दिव्य चमत्कार और नवरंगीलाल

एक दिन वे उपवन के निकट खेल रहे थे। राधा कृष्ण के मनोमोहक ध्यान में मग्न थे कि अचानक निकटस्थ सूखे कुएं में गिर पड़े। उनके पिता पुत्र की यह दशा देख कर विह्वल हो गए वे उनको बाहर निकालने के लिए स्वयं कुएं में कूदने ही जा रहे थे कि लोगों ने कुएं में एक दिव्य प्रकाश फैलते देखा। हितहरिवश श्याम सुंदर की एक सुंदर मूर्ति को लेकर बाहर आ गए। कुआं जल से भर गया। हितहरिवश ने अपने नए श्यामसुंदर के विग्रह का नाम नवरंगीलाल रखा। वे नवरंगीलाल ठाकुर की विधिपूर्वक पूजा अर्चा करने लगे। कुछ दिनों के बाद राधारानी ने उन पर कृपा की दर्शन दिया तथा मंत्र दिया। इस प्रकार हितहरिवश ने राधा रूपी गुरु का शिष्यत्व सौभाग्य पाया। आठ वर्ष की अवस्था में उनका उपनयन संस्कार हुआ और सोलह साल के होते होते वे रुक्मिणी देवी से विवाहित कर दिए गए। थोड़े समय के बाद उनके माता पिता का देहांत हो गया। इस घटना से वे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने वृंदावन में रहने का निश्चय किया। नवरंगीलाल की सेवा घरवालों पर सौंप कर वे श्रीकृष्ण और राधा के परम मधुर दिव्य रमण स्थल वृंदावन के लिए चल पड़े। वे पूर्णानुराग रस सागर सारमूर्ति श्री राधा की कृपा का स्मरण करते चले जा रहे थे।

वृंदावन आगमन और सेवा स्थापना

मार्ग में चिड़ियावल ग्राम में आत्मदेव नामक ब्राह्मण से भेंट की। ब्राह्मण ने उनको राधावल्लभ की मूर्ति दी। हितहरिवश वृंदावन की सुषमा का चिंतन करते हुए आगे बढ़ने लगे। उन्होंने वृंदावन में आकर सेवा कुंज में निवास स्थिर किया। राधावल्लभ की स्थापना की। गृहस्थ वेश में रह कर भजन करने लगे। श्री राधा कृष्ण के लीलाविलास संबंधी पदों की रचना करने लगे। उनकी काव्यवाणी परम मधुर है। उनको श्रीकृष्ण की वंशी का अवतार स्वीकार किया जाता है। वे राधावल्लभी सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे।

राधावल्लभी सम्प्रदाय की महिमा

इस सम्प्रदाय में प्रेम श्रृंगार के संयोग लीला विलास का ही आश्रय लिया जाता है वियोग श्रृंगार की मान्यता ही नहीं है। कृष्ण राधा से कभी अलग ही नहीं होते वे उनके साथ नित्य विहार करते रहते हैं। श्री राधा कृष्ण की निकुंज केली के चिंतन का आनंद ही परम रस मधुर भाव है। इस सम्प्रदाय में इसी रस का अनुभव किया जाता है। हितहरिवश ने श्री राधा की उपासना पर जोर दिया उनकी उपासना और प्रसन्नता से ही कृष्ण भक्ति का आनंद प्राप्त होता है ऐसी उनकी विज्ञप्ति है। राधावल्लभी सम्प्रदाय में राधा की महिमा अनंत और अपार स्वीकार की गई है। ऐसा कहा जाता है कि श्री प्रिया जी ने ललिता को रास मंडल की रचना करने का आदेश दिया। उन्होंने कहा कि उस रास मंडल में हम दोनों प्रिया प्रियतम रास क्रिया में स्थित होंगे तुम लोग परिक्रमा करना। प्रिया प्रियतम ने अभ्यंतर निकुंज में प्रवेश किया।

रास क्रिया में राधा की नूपुर ध्वनि से ब्रह्म का प्राकट्य हुआ तदनंतर माया से परे महत्तत्त्व पुरुष का प्राकट्य हुआ नारायण स्वयं आविर्भूत हुए और नारायण के नाभि कमल से ब्रह्मा प्रकट हुए। राधा तत्त्व की प्राप्ति और अनुभूति के लिए बहुत बड़ी तपस्या का वरण करना पड़ता है। राधावल्लभी सम्प्रदाय में राधा तत्त्व की बड़ी महिमा है हितहरिवश इस तत्त्व के परम ज्ञाता ही नहीं अनुभवी भी थे। हितहरिवश की उपासना सखी भाव की थी। दास्य और कैकर्य में सत्य और प्रेम में हितहरिवश ने राधा कृष्ण की मधुर भक्ति का माध्यम स्थिर किया। आचार्य ने विशुद्ध भगवत प्रेम का राधासुधानिधि में साहित्यीकरण किया।

हितहरिवंश जी की रचनाएं

महात्मा हितहरिवंश जी ने श्री राधा कृष्ण के लीलाविलास संबंधी पदों की रचना की। उनकी काव्यवाणी परम मधुर है। उन्होंने विशुद्ध भगवत प्रेम का साहित्यीकरण राधासुधानिधि में किया। ये रचनाएं राधा कृष्ण की मधुर लीला को व्यक्त करती हैं और भक्ति के रस को गहराई से भर देती हैं। राधासुधानिधि में उन्होंने भगवत प्रेम को शब्दों का रूप दिया जो परम पावन और रसमय है। पदों की रचना भी ऐसी मधुर है कि सुनने वाले का हृदय राधा कृष्ण में लीन हो जाता है।

नित्य वसंत का दिव्य विलास

महात्मा हितहरिवंश ने वृंदावन में नित्य वसंत का विलास पाया। वंशी वट पर सदा मीठी मीठी दिव्य वंशी ध्वनि का श्रवण किया। उनके नयनों ने नित्य रास का दर्शन किया। सम्वत 1609 विक्रमी की शारदीय पूर्णिमा उनके जीवन की अंतिम तिथि थी। इस प्रकार उनकी दिव्य लीला वृंदावन की पावन भूमि में समा गई जहां नित्य रास और वसंत का आनंद निरंतर बना रहा। उनकी पूरी लीला राधा भक्ति के रस में डूबी हुई थी और अंत तक वे उसी रसमय भाव में स्थित रहे।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

युद्ध की आंच भारत तक

तेल महंगा, सोना उछला, बाजार में डर

@ अभिषेक चौबे

दुनिया के नक्शे पर कई बार ऐसे युद्ध होते हैं जो हजारों किलोमीटर दूर होते हैं, लेकिन उनका असर हर घर तक पहुंच जाता है। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव ने एक बार फिर यही सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या आने वाले दिनों में आम आदमी की जेब पर महंगाई का नया बोझ पड़ेगा।अमेरिका, इज़राइल और ईरान के बीच बढ़ते सैन्य तनाव ने वैश्विक बाजारों को अस्थिर कर दिया है। विशेषज्ञों का कहना है कि अगर हालात लंबे समय तक बिगड़ते हैं और दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण तेल मार्ग होर्मुज जलडमरूमध्य पर असर पड़ता है, तो भारत में पेट्रोल-डीजल से लेकर सोना और शेयर बाजार तक सब प्रभावित हो सकते हैं।यह कहानी सिर्फ अंतरराष्ट्रीय राजनीति की नहीं है। यह कहानी उस परिवार की भी है जो रोज मोटरसाइकिल में पेट्रोल भरवाते समय कीमत देखता है। यह कहानी उस किसान की भी है जिसकी खेती डीजल पर चलती है। और यह कहानी उस मध्यम वर्गीय परिवार की भी है जो सोना सुरक्षित निवेश मानकर खरीदता है।

युद्ध दूर, असर बहुत पास

भारत अपनी जरूरत का लगभग 90 प्रतिशत कच्चा तेल आयात करता है। इसमें से करीब आधा तेल खाड़ी क्षेत्र से आता है और उसका बड़ा हिस्सा होर्मुज जलडमरूमध्य से होकर गुजरता है। यही कारण है कि जब भी इस क्षेत्र में तनाव बढ़ता है, भारत की चिंता भी बढ़ जाती है।अंतरराष्ट्रीय बाजार में फिलहाल ब्रेंट क्रूड करीब 70 डॉलर प्रति बैरल के आसपास है। लेकिन यदि युद्ध लंबा खिंचता है और तेल आपूर्ति प्रभावित होती है, तो कीमतें 100 से 120 डॉलर प्रति बैरल तक पहुंच सकती हैं।इतिहास गवाह है कि तेल की कीमत बढ़ते ही महंगाई की लहर पूरे विश्व में फैलती है।

सबसे पहले असर आम आदमी पर

विशेषज्ञों का अनुमान है कि यदि कच्चे तेल के दाम तेजी से बढ़ते हैं तो भारत में पेट्रोल और डीजल 10 से 12 रुपये प्रति लीटर तक महंगे हो सकते हैं।दिल्ली में पेट्रोल की कीमत लगभग 95 रुपये प्रति लीटर से बढ़कर 105 रुपये तक पहुंच सकती है, जबकि डीजल 88 रुपये से बढ़कर 96 रुपये तक जा सकता है।यह बढ़ोतरी सिर्फ वाहन चलाने वालों को ही प्रभावित नहीं करेगी।ट्रांसपोर्ट महंगा होगा,सब्जियां और राशन महंगे होंगे,खेती की लागत बढ़ेगी,उद्योगों का खर्च बढ़ेगा यानी असर हर घर तक पहुंचेगा।भारत में तेल की कीमतें सरकारी तेल कंपनियां तय करती हैं, लेकिन अंतिम कीमत पर केंद्र और राज्य सरकारों के टैक्स का बड़ा प्रभाव होता है। कई बार सरकार टैक्स घटाकर जनता को राहत देती है।

क्यों इतना महत्वपूर्ण है होर्मुज जलडमरूमध्य

होर्मुज जलडमरूमध्य दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों में से एक है। यह फारस की खाड़ी को अरब सागर से जोड़ता है।इसकी लंबाई लगभग 167 किलोमीटर

हैसबसे संकरा हिस्सा करीब 33 किलोमीटर चौड़ा है। दुनिया के कुल तेल का लगभग 20 प्रतिशत इसी रास्ते से गुजरता है। हर दिन करीब 1.8 से 2 करोड़ बैरल तेल यहां से ट्रांसपोर्ट होता है।सऊदी अरब, इराक, कुवैत और ईरान जैसे बड़े तेल निर्यातक इसी मार्ग पर निर्भर हैं।यदि यह मार्ग बंद होता है, तो वैश्विक ऊर्जा बाजार में बड़ा संकट पैदा हो सकता है।

सोना क्यों बन जाता है सबसे सुरक्षित निवेश

जब दुनिया में युद्ध या आर्थिक संकट बढ़ता है, तो निवेशक शेयर बाजार से पैसा निकालकर सोने में निवेश करते हैं। यही कारण है कि युद्ध के समय सोने की कीमत तेजी से बढ़ती है।कमोडिटी विशेषज्ञों का अनुमान है कि भारत में सोना 1.60 लाख रुपये प्रति 10 ग्राम से बढ़कर 1.90 लाख रुपये तक जा सकता है।चांदी भी 2.67 लाख रुपये प्रति किलो से बढ़कर 3.50 लाख रुपये तक पहुंच सकती है।भारत में सोना सिर्फ निवेश नहीं, बल्कि भावनाओं से जुड़ा होता है।शादी, त्योहार और पारिवारिक परंपराओं में सोने का विशेष महत्व है। ऐसे में कीमत बढ़ने का असर सीधे परिवारों पर पड़ता है।

शेयर बाजार में घबराहट का माहौल

युद्ध की खबरें आते ही शेयर बाजार में अनिश्चितता बढ़ जाती है।विशेषज्ञों का मानना है कि शुरुआती दौर में बाजार 1 से 1.5 प्रतिशत तक गिर सकता है। सेंसेक्स 1200 से 1300 अंक तक गिर सकता है। निफ्टी 250 से 300 अंक तक कमजोर हो सकता है। निवेशक जोखिम से बचने के लिए सुरक्षित निवेश की ओर रुख करते हैं।हालांकि यदि हालात जल्दी सामान्य हो जाएं तो बाजार भी तेजी से संभल सकता है।

संकट से पहले रणनीति

सरकारी सूत्रों के अनुसार भारत पहले से तैयारी कर रहा है।खाड़ी देशों के अलावा अन्य देशों से तेल खरीद बढ़ाई जा रही है। रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार को मजबूत किया जा रहा है। वैकल्पिक सप्लाई रूट्स पर नजर रखी जा रही है। भारत के पास लगभग 9 से 10 दिन का रणनीतिक तेल भंडार मौजूद है, जिसे जरूरत पड़ने पर इस्तेमाल किया जा सकता है।दिलचस्प बात यह है कि यदि होर्मुज जलडमरूमध्य बंद होता है तो नुकसान सिर्फ दुनिया को नहीं बल्कि ईरान को भी होगा।ईरान खुद रोज लगभग 17 लाख बैरल तेल इसी रास्ते से निर्यात करता है।चीन उसका सबसे बड़ा खरीदार है। सप्लाई रुकने पर ईरान की अर्थव्यवस्था पर भी दबाव बढ़ सकता है।यही कारण है कि विशेषज्ञ मानते हैं कि यह कदम अंतिम विकल्प ही हो सकता है।

सऊदी अरब के पास वैकल्पिक रास्ता

सऊदी अरब के पास ईस्ट-वेस्ट पाइपलाइन नाम का विकल्प मौजूद है, जो रेड सी तक तेल पहुंचाती है।इस पाइपलाइन से रोज लगभग 50 लाख बैरल तेल भेजा जा सकता है।हालांकि यह पूरी तरह होर्मुज का विकल्प नहीं बन सकता। जब भी दुनिया में युद्ध होता है, महंगाई बढ़ती है।कारण साफ है कि सप्लाई बाधित होती है। ट्रांसपोर्ट महंगा होता है,बाजार में डर बढ़ता है। 1973 का तेल संकट और 1991 का खाड़ी युद्ध इसके बड़े उदाहरण हैं। आज भी वही स्थिति बनती दिख रही है।विशेषज्ञ मानते हैं कि यदि कूटनीतिक प्रयास सफल होते हैं तो हालात जल्दी सामान्य हो सकते हैं। लेकिन यदि तनाव बढ़ा तो महंगाई का दबाव बढ़ना तय है।दुनिया के बड़े युद्ध हमेशा सिर्फ सीमाओं पर नहीं लड़े जाते।

उनका असर आम लोगों की जिंदगी में दिखाई देता है।जब कहीं मिसाइल गिरती है, तो उसकी गूंज कई बार बाजारों में सुनाई देती है। और जब बाजार हिलते हैं, तो सबसे पहले असर आम आदमी की जेब पर पड़ता है।शायद यही वजह है कि दुनिया भर के लोग शांति की कामना करते हैं।क्योंकि शांति सिर्फ राजनीति का विषय नहीं है, यह हर घर की जरूरत है।

मां राधा ही है मां दुर्गा

भगवान श्रीकृष्ण राधा हैं और मां राधा हैं भगवान श्रीकृष्ण। धरती पर जितने भी दुख, कष्ट हैं, सबका निवारण दुर्गा का पाठ है, जिसने धरती को, सूरज, चांद, तारों को, आकाश, अग्नि, जल, वायु को बनाया है, ब्रह्मा, विष्णु, महेश को बनाया है, जो कुछ भी हमें दिखाई दे रहा है, उस सबको पैदा किया है। उसी दुर्गा मां की कृपा से सभी कुछ है, जितने भी ग्रंथ हैं उन सभी में किसी भी देवी-देवता ने यह नहीं कहा कि मैंने सबको पैदा किया है।

मां राधा की परा और अपरा प्रकृति

परम पूज्य सदगुरुदेव जी ने कहा कि मां राधा ने कहा है कि मेरी आठ प्रकार की प्रकृति-पृथ्वी, आकाश, वायु, जल, अग्नि, मन, बुद्धि और अहंकार हैं जो कि निकृष्ट हैं, जो जड़ हैं, जो समाप्त हो जाते हैं, नष्ट हो जाते हैं। लेकिन मां परा का स्वरूप हैं। मां सनातन हैं, सत्य हैं, और शाश्वत हैं। मां लक्ष्मी, काली और सरस्वती के तीन रूप हैं जो सृष्टि का पालन, संहार और सृजन करते हैं। ये जम्मू की पावन भूमि है, जहां पर मां स्वयं विराजमान हैं। लेकिन फिर भी यहां रोग, बीमारी और कष्ट तथा समस्याएं हैं क्योंकि ये सब भौतिक प्रकृति अर्थात अपरा के कारण हैं; उसका एक ही बहुत बड़ा कारण यह है कि लोग पाठ नहीं करते। यहां रहकर भी लोग मां का पाठ नहीं करते, पाठ करने से सारे रोग, कष्ट, समस्याएं दूर हो जाते हैं।

इस तरह करें पाठ

परम पूज्य सदगुरुदेव जी ने कहा कि पाठ यदि निष्कीलन, शापोद्धार के बिना किया जाए तब उसका संपूर्ण लाभ नहीं मिलता है। मां दुर्गा का कथन है कि जो साधक कृष्ण पक्ष की अष्टमी और चतुर्दशी को अपना सब कुछ मुझे समर्पण कर देता है तो मैं उससे प्रसन्न हो जाती हूं। जो व्यक्ति परिहार, उत्कीलन, निष्कीलन, शापोद्धार करके विधिपूर्वक मेरा पाठ करता है, उसे ऐश्वर्य-कीर्ति, यश, धन सभी की प्राप्ति होती है। मैं उसकी सभी मनोकामनाओं को पूर्ण कर देती हूं और जो ऐसा नहीं करता है तो उसका नाश हो जाता है। ऐसा दुर्गा सप्तशती में वर्णन है। यह भी वर्णन है कि शिक्षा का विनाश हो जाता है और शरीर भी नष्ट हो जाता है लेकिन विद्या कभी नष्ट नहीं होती है।

परम पूज्य सद्गुरुदेव जी ने कहा कि आत्मा न कहीं आता है न जाता है, यह स्थिर है। सबका आत्मा एक है। सभी यहां पर अपने दुखों, रोगों और कष्टों के निवारण के लिए आए हुए हैं, कोई भी व्यक्ति मुक्ति या मोक्ष के बारे में जानने की इच्छा नहीं रखता है। यह भी जरूरी है क्योंकि तन सही होगा तब ही मन पाठ में लगेगा। आत्मा न तो शस्त्र से कटती है, न जल में गलती है और न ही अग्नि में जलती है। यह शाश्वत, सनातन और अकाट्य है। जो आत्मा का रहस्य जान लेता है वही परमात्मा की अनुभूति कर सकता है। यह मन, चित्त, बुद्धि से पार का विषय है। भगवान श्री कृष्ण ने कहा है कि मेरी पृथ्वी, आकाश, वायु, जल, अग्नि, मन, बुद्धि और अहंकार आठ प्रकार की अपरा प्रकृति है जो कि निकृष्ट है और आत्मा परा है जो शाश्वत है, सत्य है और सनातन है। परमात्मा को इन भौतिक नेत्रों से कभी नहीं देखा जा सकता है। इसके लिए दिव्य दृष्टि की आवश्यकता होती है। जैसे कि भगवान कृष्ण ने अर्जुन को दिव्य दृष्टि प्रदान की थी और वह उनके विश्वरूप को देखने में सफल हुए।

दैवव्यपाश्रय है मां का स्वरूप

आयुर्वेद के आठ अंग हैं और उनमें एक अंग दैवव्यपाश्रय है। दैवव्यपाश्रय मां भगवती का स्वरूप है। इसके भूत विद्या भी कहा जाता है। बिना मंत्रों के औषधि सूखी लकड़ी के समान होती है। वायरल, फंगल और बैक्टीरिया जैसे रोग दैवव्यपाश्रय से ही समाप्त होते हैं। हमारे पास एमबीबीएस, एमडी, एमएस डाक्टरों की टीम है जो पहले इसे नहीं मानते थे। लेकिन जब इन्होंने प्रयोग किया तो मान गए। अमेरिका की संसद हैरान हो गई। वे कहते हैं कि हमारी संस्कृति फेल हो गई क्योंकि उन्होंने अपरा के द्वारा जाना था तो परा से कैसे जान सकते हैं। दैवव्यपाश्रय मां देवी का प्रारूप है जिसे उत्कीलन, शापोद्धार, निष्कीलन, परिहार करने से ही लाभ मिलता है। यह रास्ता केवल महाब्रह्मर्षि ही बता सकते हैं।

भगवान श्री लक्ष्मी नारायण धाम के महामंत्री व मंच संबालक श्री सुशील वर्मा 'गुरुदास' जी ने कहा कि बसंत ऋतु चं प्रकृति पूरी तरह खिली हुई है। यह बासंती वातावरण हम सबके हृदय में उल्लास व उमंग भर रहा है। इस देवभूमि में मां सभी चिन्तपूर्णी के ऊर्जा स्थान में यह अद्भुत समागम हो रहा है। यह और हम सबके लिए बहुत बड़ी कृपा का अवसर है कि परम पूज्य सद्गुरुदेव जी, गुरु मां जी इस देवभूमि में हमें आशीर्वाद देने के लिए पधारे हैं। इस समय वातावरण पूरी तरह आलोकित है, खिला हुआ है। इतनी बड़ी संख्या में आप सब आए हैं जो परम पूज्य सद्गुरुदेव जी व मां दुर्गा के दीवाने हैं।

समागम डा. विजेता ने कहा कि आज हमने समागम में निशुल्क स्वास्थ्य जांच केंद्र में 130 महिलाओं की जांच की। ये यूटीआई से ग्रस्त थीं। इसके कारण उन्हें कई प्रकार की समस्याएं भी थीं। कईयों को अस्थमा, अर्थराइटिस, लीवर की समस्या, माइग्रेन, सिरदर्द, पेडू में दर्द, व्हाइट डिस्वार्ज, इंचिंग आदि की समस्याएं भी थीं। जब हमने उनका ट्रीटमेंट मिरेकल वंडर वाश से किया तो दो सेकेंड में ही अपनी समस्याओं से निजात पा गई हैं।

गुरु पात्रता की परीक्षा लेता है

गुरु के समक्ष चुप करके बैठ जाना चाहिए क्योंकि गुरु यह जानता है कि आपको क्या चाहिए। जब हम गुरु की शरण में गए तो वहां दंडवत प्रणाम करके बैठ गए और घंटों ही कोई वार्तालाप नहीं होता था। जब गुरु ने कृपा की तो वो हमें सूक्ष्म शरीर से आकाशों में ले गए और आकाश यात्रा करवाई। इससे कई अलौकिक अनुभव हुए और वे ऊपर से ही छोड़ दिया करते थे। हम फिर अपने शरीर में प्रविष्ट हो जाते थे। इस प्रकार ब्रह्मज्ञान प्राप्त हुआ। यह गुरु की महान कृपा है।

मैंने शुरू में दस वर्षों तक मां दुर्गा का पाठ किया लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। मैं कई गुरुओं और संतों के पास गया लेकिन मंतव्य सिद्ध नहीं हुआ। अंत में मैं खुद साधना करने लगा और प्रसन्न होकर देवी मां ने मुझे कहा कि ताला बंद है, चाभी है नहीं तो कैसे प्रवेश करोगे। इसके बाद मुझे दुर्गा मां की कृपा से निष्कीलन अर्थात चाबी प्राप्त हुई और मैंने पुनः दुर्गा मां का पाठ किया। जिसके फलस्वरूप मुझे मेरा निमित्त प्राप्त हो गया।

न्यायपालिका में 'भ्रष्टाचार' से पहले: एनसीईआरटी की 15 पाठ्यपुस्तक संशोधन जो बिना चुनौती के गुजर गए

बदलावों की पृष्ठभूमि और हालिया घटना

हाल ही में फरवरी 2026 में एनसीईआरटी ने क्लास 8 की सोशल साइंस किताब एक्सप्लोरिंग सोसाइटी इंडिया एंड बियॉन्ड पार्ट 2 जारी की थी। इस किताब में न्यायपालिका की भूमिका वाले अध्याय में भ्रष्टाचार पर एक छोटा सेक्शन था जिसमें जजों पर भ्रष्टाचार के शिकायतें, केसों का बड़ा बैकलॉग और जजों की कमी जैसी बातें लिखी गई थीं। किताब 23 फरवरी को बाजार में आई लेकिन अगले ही दिन 24 फरवरी को शिक्षा मंत्री ने इसे तुरंत वापस लेने का आदेश दे दिया। सुप्रीम कोर्ट ने खुद संज्ञान लिया और किताब की छपाई बिक्री और डिजिटल शेयरिंग पर पूरा बैन लगा दिया। एनसीईआरटी ने 26 फरवरी को माफी मांगी और कहा कि यह गलती से हो गया था और सामग्री अनुचित थी। यह मामला इसलिए अलग है क्योंकि एनसीईआरटी ने 2014 से अब तक चार बार किताबों में बड़े बदलाव किए हैं। ये बदलाव राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और नई पाठ्यचर्या के तहत हुए। 2022 में कोविड के बाद छात्रों का बोझ कम करने के लिए रेशनलाइजेशन किया गया जिसमें कई पन्ने और विषय हटा दिए गए। इन 15 उदाहरणों में बदलाव हुए लेकिन कोई बड़ा विरोध या अदालती रोक नहीं लगी। एनसीईआरटी कहता है कि बदलाव विशेषज्ञों की टीम ने सलाह दी और किताबें समय के साथ बेहतर बनानी जरूरी हैं। कुछ शिक्षाविद् मानते हैं कि ये बदलाव छात्रों को आसान समझ देते हैं जबकि कुछ कहते हैं कि महत्वपूर्ण इतिहास और सामाजिक मुद्दे कम हो गए। फिर भी इन पर चुप्पी रही। यह सोचने वाली बात है कि शिक्षा में बदलाव कैसे होते हैं और कब उन्हें तुरंत चुनौती मिलती है। संस्थाओं की इज्जत बचाने में तेजी दिखी लेकिन छात्रों के पाठ्यक्रम में पहले के कई बदलाव बिना आवाज के पास हो गए। कुल मिलाकर यह दिखाता है कि किताबें देश की जरूरतों के हिसाब से अपडेट होती रहती हैं लेकिन संतुलन बनाए रखना भी जरूरी है।

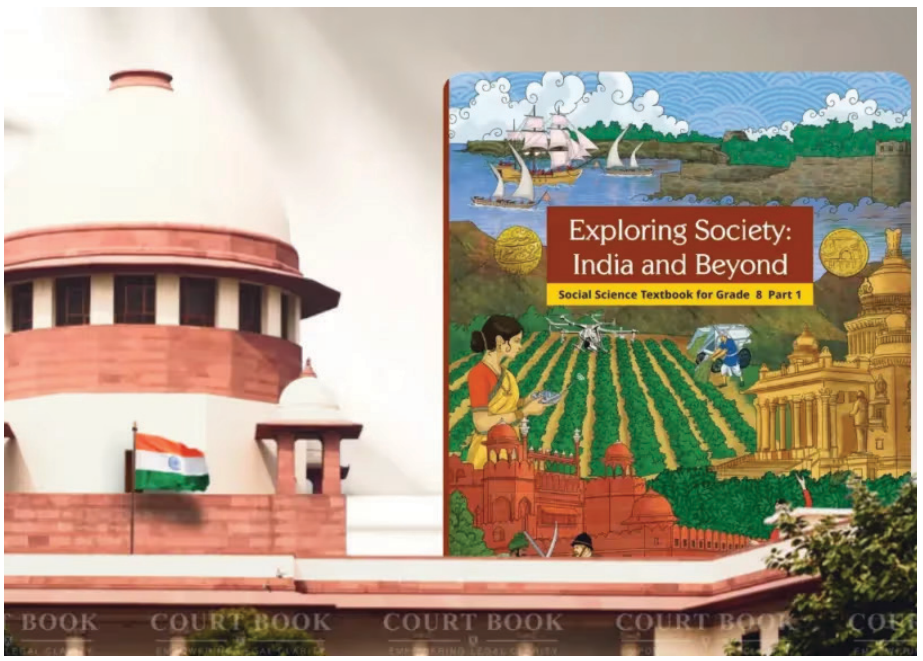

सांप्रदायिक दंगों और घटनाओं पर हुए संशोधन

एनसीईआरटी की किताबों में सांप्रदायिक दंगों से जुड़े कई बदलाव हुए जो बिना किसी बड़ी चुनौती के लागू हो गए। 2017 में क्लास 12 की राजनीति विज्ञान किताब में 2002 गुजरात दंगों को पहले एंटी मुस्लिम रायट्स कहा जाता था लेकिन नए संस्करण में सिर्फ गुजरात रायट्स लिख दिया गया। 2022 में रेशनलाइजेशन के दौरान उसी किताब से गुजरात दंगों का सेक्शन छोटा कर दिया गया जिसमें नेशनल ह्यूमन राइट्स कमीशन की आलोचना हटा दी गई कि गुजरात सरकार ने हिंसा रोकने में नाकाम रही। घटना की समयरेखा भी हटाई गई जिसमें ट्रेन जलाने और उसके बाद मुस्लिमों पर हमले का जिक्र था। एक लाइन हटाई गई जिसमें लिखा था कि धार्मिक भावनाओं का राजनीति में इस्तेमाल खतरनाक है। उसी साल क्लास 12 सोशियोलॉजी किताब से एक वाक्य हटा दिया गया जिसमें कहा गया था कि दो सबसे बड़े सांप्रदायिक हिंसा के मामले कांग्रेस और भाजपा शासन में हुए थे 1984 दिल्ली सिख दंगे और 2002 गुजरात दंगे। 2024 में क्लास 12 राजनीति विज्ञान किताब में बाबरी मस्जिद को तीन गुंबद वाली इमारत कहा गया और पहले वाले विस्तार से हटा दिया गया जिसमें दोनों तरफ की भीड़ जुटाने रथ यात्रा और भाजपा के अफसोस का जिक्र था। ये सब बदलाव छात्रों को घटनाओं की समझ देते हैं लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि संदर्भ कम हो गए। एनसीईआरटी का तर्क था कि बोझ कम करना और दोहराव हटाना जरूरी था। इन पर कोई अदालत नहीं गई और न ही किताबें वापस ली गईं। यह दिखाता है कि संवेदनशील विषयों पर बदलाव आसानी से हो सकते हैं अगर वे शिक्षा नीति के तहत हों। शिक्षक और अभिभावक इन बदलावों को रोजाना इस्तेमाल करते हैं लेकिन बड़े स्तर पर चर्चा नहीं हुई। संतुलित नजरिया रखें तो इतिहास को तथ्यों के साथ पढ़ाना चाहिए ताकि बच्चे सही सीख सकें। ये उदाहरण बताते हैं कि किताबें कैसे समय के साथ ढलती हैं।

मध्यकालीन इतिहास की किताबों में बड़े बदलाव

मध्यकालीन इतिहास से जुड़े कई संशोधन एनसीईआरटी ने किए जो बिना चुनौती के लागू रहे। 2022 में क्लास 7 की इतिहास किताब से दिल्ली सल्तनत और मुगल साम्राज्य के बड़े सेक्शन हटा दिए गए जिसमें सल्तनत के विस्तार और मुगल बादशाहों की उपलब्धियों का वर्णन था। 2024 में क्लास 8 सोशल साइंस किताब पार्ट 1 में बाबर को क्रूर और निर्दयी विजेता बताया गया जिसने शहरों की पूरी आबादी मार दी और अकबर के शासन को क्रूरता और सहिष्णुता का मिश्रण कहा गया। किताब में इतिहास के अंधेरे काल पर एक नोट जोड़ा गया कि इन घटनाओं को बिना आज के लोगों को दोष दिए पढ़ना चाहिए। उसी किताब से टीपू सुल्तान हैदर अली और एंग्लो मैसूर युद्धों का जिक्र पूरी तरह छोड़ दिया गया जो पुरानी किताब में था। 2025 में क्लास 7 सोशल साइंस किताब पार्ट 2 में गजनवी आक्रमणों का सेक्शन बड़ा कर दिया गया जिसमें महमूद गजनवी के लूट और मंदिर तोड़ने खासकर सोमनाथ मंदिर की बात विस्तार से लिखी गई और कहा गया कि वे अपने इस्लाम को फैलाने के लिए उत्सुक थे। ये बदलाव छात्रों को इतिहास के दोनों पक्ष दिखाते हैं लेकिन कुछ इतिहासकार कहते हैं कि पूरा संदर्भ कम हो गया। एनसीईआरटी ने कहा कि ये बदलाव नई खोजों और नीति के अनुसार हैं ताकि बच्चे बोझ महसूस न करें। इन पर कोई बड़ा विरोध नहीं हुआ और किताबें स्कूलों में चल रही हैं। यह सोचने की बात है कि इतिहास पढ़ाते समय संतुलन कैसे रखा जाए ताकि बच्चे पूरे सच जान सकें। ये उदाहरण दिखाते हैं कि किताबें कैसे पुरानी घटनाओं को नए तरीके से पेश करती हैं। शिक्षाविद् मानते हैं कि बदलाव जरूरी हैं लेकिन पारदर्शिता भी होनी चाहिए। कुल मिलाकर ये 15 में से कई उदाहरण मध्यकाल से जुड़े हैं जो बिना रुकावट के पास हो गए।

सामाजिक न्याय और अल्पसंख्यक मुद्दों पर संशोधन

सामाजिक न्याय से जुड़े कई बदलाव भी बिना चुनौती के हुए। 2022 में क्लास 12 सोशियोलॉजी किताब से अस्पृश्यता पर पैराग्राफ हटा दिया गया जिसमें लिखा था कि दलित अक्सर खेती मजदूरी सफाई या चमड़े का काम करते हैं और अच्छी नौकरियां मिलना मुश्किल होता है। उसी किताब से मुस्लिमों पर एक आम स्टिरियोटाइप वाला बॉक्स हटा दिया गया जो क्लास 6 सोशल साइंस में था जिसमें कहा गया था कि मुस्लिम लड़कियों की पढ़ाई में दिलचस्पी नहीं रखते लेकिन यह सच नहीं है। एक और पैराग्राफ हटाया गया जिसमें अल्पसंख्यकों की राजनीतिक कमजोरी बताई गई थी कि बहुमत सत्ता में आकर राज्य का इस्तेमाल उनकी संस्थाओं को दबाने के लिए कर सकता है। 2024 में क्लास 11 राजनीति विज्ञान किताब में वोट बैंक पॉलिटिक्स में नई बात जोड़ी गई कि यह अल्पसंख्यक तुष्टिकरण से जुड़ा है जिसमें समानता के सिद्धांत को नजरअंदाज कर अल्पसंख्यक हितों को प्राथमिकता दी जाती है। पुरानी किताब में यह नहीं था। ये बदलाव सामाजिक मुद्दों को नए नजरिए से दिखाते हैं। एनसीईआरटी का कहना है कि ये अपडेट छात्रों को वर्तमान राजनीति समझाने के लिए हैं। कुछ लोग इनमें सकारात्मक बदलाव देखते हैं जबकि अन्य चिंता जताते हैं कि असमानता के मुद्दे कम हो गए। फिर भी इन पर कोई अदालती कार्रवाई या किताब वापसी नहीं हुई। यह बताता है कि शिक्षा में सामाजिक विषयों को कैसे संभाला जाता है। बच्चे रोज स्कूल में इन किताबों से पढ़ते हैं और शिक्षक उन्हें समझाते हैं। संतुलित तरीके से देखें तो समाज के हर पहलू को शामिल करना जरूरी है ताकि बच्चे निष्पक्ष सोच सकें। ये उदाहरण 15 संशोधनों का हिस्सा हैं जो चुपचाप लागू हो गए।

गांधी जी हड़प्पा सभ्यता और बाकी महत्वपूर्ण बदलाव

अन्य कई उदाहरण भी हैं जो बिना चुनौती के पास हो गए। 2023 में क्लास 12 राजनीति विज्ञान किताब से गांधी जी की हत्या के बाद आरएसएस पर बैन और हिंदू अतिवादियों की नाराजगी वाला पैराग्राफ हटा दिया गया जिसमें लिखा था कि गांधी हिंदू मुस्लिम एकता चाहते थे इसलिए हिंदू अतिवादी उन्हें नापसंद करते थे। 2024 में क्लास 6 सोशल साइंस किताब में हड़प्पा सभ्यता को सिंधु सरस्वती सभ्यता कहा गया और सरस्वती नदी का कई बार जिक्र जोड़ा गया जो पुरानी किताब में नहीं था। इनके अलावा बाकी उदाहरणों में भी इसी तरह की छोटी बड़ी कटौतियां और जोड़ हुईं जैसे कुछ नामों का नया तरीका और घटनाओं का नया फोकस। कुल 15 ऐसे मामले हैं जो रिपोर्ट्स में आए लेकिन कोई बड़ा विवाद या रोक नहीं लगी। एनसीईआरटी ने कहा कि ये सभी बदलाव विशेषज्ञ समिति की सिफारिश पर और नई शिक्षा नीति के तहत किए गए ताकि किताबें रोचक और कम बोझ वाली बन सकें। कुछ शिक्षक इन बदलावों से खुश हैं क्योंकि बच्चे आसानी से समझ पाते हैं जबकि कुछ चिंतित हैं कि महत्वपूर्ण विवरण कम हो गए। फिर भी इन पर चुप्पी रही। यह सोचने वाली बात है कि शिक्षा कैसे देश की सोच को आकार देती है। गांधी जी जैसे महान नेता या प्राचीन सभ्यता जैसे विषयों को नए तरीके से पढ़ाना छात्रों की समझ बढ़ा सकता है लेकिन पूरे तथ्य रखना भी जरूरी है। ये उदाहरण बताते हैं कि किताबें लगातार विकसित होती रहती हैं। कुल मिलाकर 15 संशोधन दिखाते हैं कि शिक्षा क्षेत्र में शांतिपूर्वक बदलाव संभव हैं।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

पाकिस्तान-अफगानिस्तान की पुरानी दुश्मनी फूट पड़ी: 132 साल का विवाद अब खुली जंग बन गया

डूरंड लाइन: 132 साल पुरानी सीमा की शुरुआत

यह विवाद 1893 में शुरू हुआ जब ब्रिटिश भारत के अधिकारी सर मॉर्टिमर डूरंड ने अफगानिस्तान के अमीर अब्दुर रहमान खान से बातचीत की। दोनों पक्षों ने एक समझौता किया जिससे 2640 किलोमीटर लंबी सीमा तय हुई। ब्रिटेन चाहता था कि रूस की तरफ से खतरा कम हो और अफगानिस्तान उसके नियंत्रण में रहे। इस लाइन ने पश्तून लोगों को दो हिस्सों में बांट दिया। एक तरफ पाकिस्तान का इलाका और दूसरी तरफ अफगानिस्तान। लोग कहते हैं कि परिवार और कबीले बंट गए। 1947 में जब पाकिस्तान बना तो उसने इस सीमा को अपना माना। लेकिन अफगानिस्तान ने कभी स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा कि यह ब्रिटिश दबाव में हुआ था और असली सीमा इंडस नदी तक होनी चाहिए। अफगानिस्तान ने पाकिस्तान के यूनाइटेड नेशंस में शामिल होने का विरोध भी किया। कई बार उन्होंने पश्तूनिस्तान बनाने की बात की। इस वजह से दोनों देशों के बीच छोटी-छोटी लड़ाइयां होती रही। सीमा पर रहने वाले लोग बिना पासपोर्ट के आते-जाते थे। लेकिन सरकारें हमेशा एक-दूसरे पर आरोप लगाती रहीं। आज भी अफगानिस्तान कहता है कि डूरंड लाइन असली नहीं है जबकि पाकिस्तान इसे अपना अंतरराष्ट्रीय बॉर्डर मानता है। यह पुरानी बात अब भी दोनों देशों के रिश्तों को खराब कर रही है। लोग सोचते हैं कि अगर ब्रिटिश ने ऐसी लाइन न खींची होती तो शायद आज यह जंग न होती। लेकिन इतिहास बदलना मुश्किल है। दोनों तरफ के लोग इससे परेशान हैं क्योंकि उनका रोजमर्रा का जीवन प्रभावित होता है।

तालिबान और टीटीपी: जंग का नया रूप

2021 में जब अफगानिस्तान में तालिबान की सरकार बनी तो शुरू में पाकिस्तान ने खुशी जताई। लेकिन जल्दी ही रिश्ते खराब हो गए। पाकिस्तान का कहना है कि अफगान तालिबान टीटीपी नाम के गुट को शरण दे रहा है। टीटीपी 2007 में बनी और पाकिस्तान के अंदर हमले करती है। यह गुट अफगान तालिबान से विचारधारा और भाषा में काफी मिलता-जुलता है। पाकिस्तान कहता है कि टीटीपी के हमलों में 2025 में एक हजार से ज्यादा घटनाएं हुईं। इनमें सैनिक मारे गए और आम लोग भी प्रभावित हुए। पाकिस्तान चाहता है कि अफगानिस्तान टीटीपी पर काबू करे लेकिन अफगानिस्तान इनकार करता है। वह कहता है कि यह पाकिस्तान की अपनी समस्या है। सीमा पर दोनों तरफ से गोलीबारी होती रहती है। पाकिस्तान ने सीमा पर बाड़ लगाई लेकिन विवाद खत्म नहीं हुआ। अफगानिस्तान को लगता है कि पाकिस्तान उसकी जमीन पर हमला कर रहा है जबकि पाकिस्तान कहता है कि वह अपनी रक्षा कर रहा है। दोनों देश मुस्लिम हैं फिर भी एक-दूसरे को दोष देते हैं। टीटीपी के हमलों से पाकिस्तान में अस्थिरता बढ़ी है। अफगानिस्तान में भी आर्थिक परेशानी है क्योंकि सीमा बंद होने से व्यापार रुक जाता है। आम लोगों का जीवन मुश्किल हो गया है। बच्चे स्कूल नहीं जा पाते और परिवार बंट गए हैं। यह स्थिति सोचने पर मजबूर करती है कि क्या दोनों देश मिलकर समस्या हल कर सकते हैं। लेकिन अभी दोनों तरफ गुस्सा है। पाकिस्तान कहता है कि उसके पास सबूत हैं जबकि अफगानिस्तान कहता है कि पाकिस्तान झूठ बोल रहा है।

2025 में पहले झड़पें और सीजफायर

अक्टूबर 2025 में दोनों देशों के बीच बड़ी लड़ाई हुई। पाकिस्तान ने अफगानिस्तान के काबुल, खोस्त और दूसरे इलाकों में हवाई हमले किए। इसका नाम था ऑपरेशन खैबर स्टॉर्म। पाकिस्तान ने कहा कि वह टीटीपी के ठिकानों पर हमला कर रहा है। अफगानिस्तान ने जवाब में सीमा पर पाकिस्तानी चौकियों पर हमला किया। दोनों तरफ सैनिक मारे गए। आम नागरिकों की भी मौत हुई। संयुक्त राष्ट्र ने चिंता जताई। फिर कतर और तुर्की की मदद से बातचीत हुई और 19 अक्टूबर को सीजफायर हो गया। दोनों ने वादा किया कि वे एक-दूसरे पर हमला नहीं करेंगे और टीटीपी पर काबू करेंगे। लेकिन सीजफायर ज्यादा दिन नहीं चला। नवंबर और दिसंबर में छोटी-छोटी घटनाएं होती रहीं। पाकिस्तान ने सीमा बंद रखी और अफगान शरणार्थियों को वापस भेजा। अफगानिस्तान ने कहा कि यह गलत है। बातचीत में पाकिस्तान ने लिखित गारंटी मांगी लेकिन तालिबान ने मना कर दिया। इस वजह से रिश्ते और खराब हुए। 2025 के अंत तक दोनों तरफ गुस्सा बढ़ गया था। लोग समझते हैं कि सीजफायर टूटना तय था क्योंकि जड़ में डूरंड लाइन और टीटीपी का मुद्दा था। दोनों देशों के नेता कहते रहे कि वे शांति चाहते हैं लेकिन कार्रवाई से उलटा हो रहा था। आम अफगान और पाकिस्तानी लोग थक चुके थे। वे चाहते थे कि सरकारें बात करें न कि गोली चलाएं। लेकिन राजनीति और सुरक्षा के मुद्दे आगे आ गए। यह घटना दिखाती है कि छोटी समस्या अगर न सुलझे तो बड़ी जंग बन सकती है।

फरवरी 2026: पाकिस्तान का 'ओपन वॉर' ऐलान

26 फरवरी 2026 की रात अफगान तालिबान ने डूरंड लाइन पर पाकिस्तानी चौकियों पर बड़ा हमला किया। उन्होंने कहा कि यह जवाबी कार्रवाई थी। पाकिस्तान ने तुरंत जवाब दिया। 27 फरवरी सुबह पाकिस्तान ने काबुल, कंधार और पक्तिया में हवाई हमले किए। रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने कहा कि अब यह ओपन वॉर है। उनका कहना था कि सब्र का प्याला भर गया। पाकिस्तान ने ऑपरेशन गजब लिल हक चलाया और सैकड़ों टीटीपी और तालिबान लड़ाकों को मारने का दावा किया। उन्होंने 297 लड़ाके मारे जाने और कई टैंक नष्ट होने की बात कही। अफगानिस्तान ने कहा कि उन्होंने 55 पाकिस्तानी सैनिक मारे और 19 चौकियां कब्जा लीं। दोनों तरफ के दावे अलग-अलग हैं और सच्चाई की पुष्टि नहीं हुई। काबुल में विस्फोटों से लोग डर गए। पाकिस्तान ने कहा कि हमले सिर्फ सैन्य ठिकानों पर थे। यह पहली बार था जब पाकिस्तान ने तालिबान सरकार के मुख्य शहरों पर सीधा हमला किया। सीमा पर गोलीबारी और तोपों की आवाज सुनाई दी। दोनों देशों में लोग चिंतित हैं। पाकिस्तान के कुछ नेता कहते हैं कि यह जरूरी था जबकि अफगानिस्तान इसे हमला बताता है। यह घटना 132 साल पुरानी लड़ाई को नई ऊंचाई दे गई। अब दोनों तरफ से और हमले हो सकते हैं लेकिन उम्मीद है कि बातचीत शुरू होगी।

दुनिया की नजर और शांति की राह

इस जंग पर दुनिया ने अलग-अलग प्रतिक्रिया दी। अमेरिका ने पाकिस्तान के अधिकार का समर्थन किया और कहा कि वह अपनी रक्षा कर सकता है। चीन ने चिंता जताई और सीजफायर की अपील की। रूस और ईरान ने दोनों से बातचीत करने को कहा। भारत ने पाकिस्तान के हमलों की निंदा की। संयुक्त राष्ट्र के महासचिव ने तुरंत युद्ध रोकने की मांग की। कई देशों का मानना है कि दोनों को डिप्लोमेसी से समस्या सुलझानी चाहिए। अफगानिस्तान ने बातचीत के लिए तैयार होने की बात कही। पाकिस्तान भी कहता है कि अगर अफगानिस्तान टीटीपी पर काबू करे तो जंग रुक सकती है। लेकिन अभी विश्वास की कमी है। लोग सोचते हैं कि अगर दोनों पड़ोसी मिलकर काम करें तो इलाका शांत हो सकता है। व्यापार बढ़ेगा और लोग बेहतर जीवन जी सकेंगे। डूरंड लाइन का विवाद पुराना है लेकिन बातचीत से इसे सुलझाया जा सकता है। दोनों देशों के आम लोग शांति चाहते हैं। बच्चे, महिलाएं और किसान सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं। यह समय है कि नेता सोचें कि जंग से क्या मिलेगा। इतिहास सिखाता है कि पड़ोसियों के साथ अच्छे रिश्ते ही तरक्की लाते हैं। उम्मीद है कि जल्दी कोई समझौता होगा और 132 साल की यह लड़ाई खत्म हो जाएगी। दोनों तरफ के लोग शांति की प्रार्थना कर रहे हैं।

दिल्ली शराब नीति घोटाला: केजरीवाल और सिसोदिया को सच में क्लीन चिट मिली या अभी भी सवाल बाकी?

दिल्ली में 2021 में आम आदमी पार्टी की सरकार ने नई शराब नीति बनाई थी। पुरानी व्यवस्था में सरकारी दुकानें शराब बेचती थीं, लेकिन नई नीति में सारी दुकानें निजी कंपनियों को दे दी गईं। शहर को 32 जोनों में बांटा गया, हर जोन में 27 दुकानें खोलने की अनुमति मिली। लाइसेंस फीस बढ़ाकर 75 लाख रुपये कर दी गई और थोक विक्रेताओं को 12 फीसदी का फिक्स मार्जिन दिया गया। सरकार का कहना था कि इससे राजस्व बढ़ेगा, शराब का माफिया खत्म होगा और ग्राहकों को अच्छी सुविधा मिलेगी। नीति नवंबर 2021 में लागू हुई, लेकिन जुलाई 2022 में इसे वापस ले लिया गया। आरोप लगे कि नीति बनाते समय कुछ खास कंपनियों को फायदा पहुंचाने के लिए नियम बदले गए। लाइसेंस फीस में छूट दी गई, कुछ जगहों पर दुकानें बिना अनुमति के खोली गईं और कुल मिलाकर सरकार को 580 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ। दक्षिण भारत की कुछ कंपनियों और नेताओं के साथ साजिश का भी इल्जाम लगा। विपक्षी पार्टियां कहती रहीं कि पैसा लेकर लाइसेंस बांटे गए और वह पैसा आम आदमी पार्टी के चुनावों में इस्तेमाल हुआ। इस नीति को लेकर शिकायतें आईं, जिसके बाद सीबीआई और ईडी ने जांच शुरू की। आम लोगों में यह चर्चा थी कि आखिर सरकार ने इतनी जल्दी नीति क्यों बदली और किसको फायदा पहुंचाया। इस मामले ने दिल्ली की राजनीति को काफी प्रभावित किया क्योंकि शराब जैसा संवेदनशील विषय था और आम आदमी इससे जुड़ा महसूस कर रहा था। नीति के पीछे का मकसद अच्छा बताया गया, लेकिन आरोपों ने पूरा मामला संदेह में डाल दिया।

शराब नीति का पूरा खेल क्या था?

दोनों नेताओं पर लगे थे क्या-क्या आरोप?

अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया पर मुख्य आरोप यह था कि उन्होंने शराब नीति बनाते समय गलत काम किया। सिसोदिया उस समय उपमुख्यमंत्री और एक्साइज मंत्री थे। उन पर इल्जाम था कि उन्होंने नीति के ड्राफ्ट में बदलाव किए, थोक विक्रेताओं को 12 फीसदी मार्जिन फिक्स किया और कुछ कंपनियों को आसानी से लाइसेंस दिलवाए। कहा गया कि कैबिनेट में पूरी चर्चा नहीं हुई और लेफ्टिनेंट गवर्नर की मंजूरी भी पूरी तरह नहीं ली गई। केजरीवाल पर आरोप था कि वे इस साजिश के मुख्य सूत्रधार थे। ईडी ने कहा कि दक्षिण समूह नाम की एक लॉबी से 100 करोड़ रुपये की रिश्वत ली गई, जो गोवा और पंजाब चुनाव में इस्तेमाल हुई। दोनों नेताओं पर भ्रष्टाचार, आपराधिक साजिश और मनी लॉन्ड्रिंग के मामले दर्ज हुए। सीबीआई ने कहा कि नीति से सरकारी खजाने को नुकसान पहुंचाया गया और निजी कंपनियों को फायदा दिया गया। गिरफ्तारियां भी हुईं - सिसोदिया फरवरी 2023 में और केजरीवाल मार्च 2024 में। आरोपकर्ता कहते थे कि मोबाइल फोन नष्ट करने जैसे सबूत भी थे। लेकिन दोनों नेताओं ने इन आरोपों को सिरे से खारिज किया और कहा कि यह राजनीतिक साजिश है। उन्होंने दावा किया कि नीति पारदर्शी तरीके से बनी थी और कोई रिश्वत नहीं ली गई। इस मामले ने आम लोगों के मन में सवाल उठाया कि क्या सत्ता में बैठे लोग ऐसे फैसले लेते वक्त सोचते हैं कि जांच एजेंसियां उन्हें निशाना बना सकती हैं। आरोप गंभीर थे, लेकिन सबूतों की कमी को लेकर बहस शुरू हो गई थी।

राउज एवेन्यू कोर्ट का फैसला सुनकर सब हैरान

27 फरवरी 2026 को दिल्ली के राउज एवेन्यू कोर्ट ने बड़ा फैसला सुनाया। स्पेशल जज जितेंद्र सिंह ने केजरीवाल, सिसोदिया समेत 23 लोगों को सीबीआई मामले में बरी कर दिया। कोर्ट ने कहा कि आरोप पत्र में इतना कमजोर सबूत है कि मुकदमा चलाने की जरूरत ही नहीं है। यह फैसला सुनकर आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ता खुशी से झूम उठे। केजरीवाल ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि यह साबित हो गया कि वे ईमानदार हैं। सिसोदिया भी कोर्ट के बाहर परिवार के साथ नजर आए। लेकिन भाजपा ने कहा कि यह सिर्फ निचली अदालत का फैसला है और वे हाई कोर्ट में अपील करेंगे। कोर्ट का 598 पन्नों का आदेश पढ़कर कई लोग हैरान रह गए क्योंकि इसमें सीबीआई की जांच की खूब आलोचना की गई। लोगों में चर्चा थी कि आखिर इतने बड़े आरोपों के बाद कोर्ट ने सबको बरी क्यों कर दिया। यह फैसला दिल्ली की राजनीति में हलचल मचा गया। कुछ लोग कह रहे थे कि न्याय व्यवस्था ने सही काम किया, जबकि कुछ का मानना था कि जांच एजेंसियां राजनीति में इस्तेमाल होती हैं। फैसले के बाद सड़कों पर जश्न हुआ, लेकिन कई सवाल भी उठे कि क्या यह अंत है या नया दौर शुरू होगा। आम आदमी इस फैसले को राहत की नजर से देख रहा था क्योंकि लंबे समय से यह मामला खींच रहा था।

कोर्ट ने बरी करने के लिए किन आधारों को रखा सामने?

कोर्ट ने कई मजबूत आधार दिए। सबसे पहला, केजरीवाल के खिलाफ कोई ठोस सबूत नहीं मिला। कोर्ट ने कहा कि उन्हें बिना किसी ठोस सामग्री के आरोपी बनाया गया, जो कानून के खिलाफ है। सिसोदिया के मामले में भी कोई रिकवरी नहीं हुई और उनकी भूमिका साबित नहीं हुई। कोर्ट ने साफ कहा कि शराब नीति में कोई बड़ी साजिश या आपराधिक मंशा नहीं थी। आरोप पत्र में आंतरिक विरोधाभास थे और सबूत सिर्फ अटकलें पर आधारित थे। अप्रोवर यानी गवाह बनाए गए लोगों के बयानों को बार-बार बदला गया, जो सही नहीं है। कोर्ट ने सीबीआई पर तंज कसा कि जांच पहले से तयशुदा और नाटकीय थी। जांच अधिकारी पर विभागीय जांच का आदेश भी दिया गया। कोर्ट ने कहा कि दक्षिण ग्रुप जैसे शब्द इस्तेमाल करना गलत और पूर्वाग्रही है। कोई प्रत्यक्ष रिश्वत या पैसे का लेन-देन साबित नहीं हुआ। 23 आरोपियों में से सभी को बरी किया गया क्योंकि आरोप पत्र न्यायिक जांच में खरा नहीं उतरा। यह फैसला दिखाता है कि अदालत सबूतों पर जोर देती है, न कि सिर्फ आरोपों पर। लोगों को लगा कि कानून सबके लिए बराबर है। लेकिन यह भी सोचने की बात है कि इतनी लंबी जांच के बाद अगर सबूत नहीं निकले तो फिर शुरू में गिरफ्तारियां क्यों हुईं। कोर्ट के इन आधारों ने पूरे मामले को नई रोशनी दी।

अब आगे क्या? क्या मामला पूरी तरह खत्म या सवाल बाकी?

यह फैसला बड़ी राहत है, लेकिन पूरी क्लीन चिट नहीं कह सकते। सीबीआई ने हाई कोर्ट में अपील कर दी है, इसलिए मामला अभी चल सकता है। ईडी का मनी लॉन्ड्रिंग केस अलग से चल रहा है, हालांकि सीबीआई केस कमजोर होने से वह भी प्रभावित हो सकता है। दोनों नेता हाई कोर्ट में ईडी केस खत्म करने की मांग कर सकते हैं। राजनीतिक रूप से आम आदमी पार्टी इसे अपनी जीत बता रही है और कह रही है कि यह केंद्र की साजिश थी। भाजपा का कहना है कि जांच सही थी और आगे लड़ेंगे। आम लोगों के लिए यह सोचने वाली बात है कि राजनीति में जांच एजेंसियों का इस्तेमाल कितना सही है। न्यायिक प्रक्रिया ने दिखाया कि बिना सबूत के कोई नहीं फंस सकता, लेकिन लंबी कानूनी लड़ाई थकान भी लाती है। भविष्य में ऐसे मामलों में ज्यादा सावधानी बरतने की जरूरत है। यह फैसला लोकतंत्र के लिए अच्छा संदेश है कि अदालत अंतिम फैसला करती है। लेकिन सच्चाई यह है कि राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप जारी रहेंगे। आम आदमी उम्मीद करता है कि अब विकास के मुद्दों पर ध्यान जाएगा। कुल मिलाकर, यह मोड़ है, लेकिन कहानी अभी पूरी नहीं हुई।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

घर में आँगन था

घर में आँगन था,
आँगन में आसमान था,

सूरज, चाँद और सितारे थे,
धरती के साथ हवा,

बादल और बारिश थी,
तुलसी का बिरवा था,

चहचहाती,दाना चुगती गौरैया थी
लाल चोंच वाले सुग्गे थे

मैना थी, कबूतर थे,
काँव-काँव करते कौवे थे

और शाम में झींगुरों का समूह गान था।
एक कोने पर गुल हज़ारा के पौधे थे

जिनमें बड़े ही सौम्य-शालीन पुष्प लगे रहते थे
जो पूरी रात जगकर

सुबह होने तक धरती पर
अपने फूलों से रंगोली बना देते थे।

आँगन सुबह-शाम बुहारा जाता था,
गर्मियों में पानी के छींटे दिए जाते थे।

कभी-कभी मेरी आजी
आँगन को गोबर से लीप देती थीं

उस दिन देवता उतर आते थे
आसमान से आँगन में,

वह मंदिर हो जाता
और हम जूते बाहर उतार देते।

बरसात की पहली बारिश के साथ
आँगन से बड़ी ज़ोर से उठती

माटी की सोंधी ख़ुशबू
जिसे हम ज़ोर से साँस खींचकर

भरते अपनी साँसो में माटी की महक
जो धीरे-धीरे रगों तक में फैल जाती।

तेज बारिश में आँगन जब झील बन जाता
हम उतार देते उसमें

अपनी काग़ज़ की कश्तियाँ और शिकारे
और उसमें चींटे-चींटियों को कराते

दुनियाँ के इस छोर से
उस छोर तक की सैर।

आसमान से उतरते पक्षियों का
प्रथम स्वागत करती थी आँगन की मुँड़ेर।

इसी मुँड़ेर पर बैठकर
कौवे किसी पाहुन के आने की

पूर्व सूचना दे जाते थे,
शायद यहीं से ताक-झाँक करते हुए

कोई कागा हमारे लोक गीतों की
एक नायिका की नथ लेकर,

उसके सोए प्रेमी को धता बताते हुए
चुपके से चंपत हो गया था

तभी तो आज तक सुनाई पड़ता है
उसका यह ताना कि—

नकबेसर कागा ले भागा
मोरा (मेरा) सैंया अभागा ना जागा।

इसी आँगन की मुँडेर पर ही
खिड़रिच (खंजन) लेकर आते

वर्षा से धुले हुए शारदीय दिन और रातें
तो माँ उन्हें देखते ही प्रणाम करती

और दौड़ी चली आती
हमें भी दिखाने के लिए

तो हमारे भी हाथ जुड़ जाते
एक पखेरू-दर्शन परंपरा के सम्मान में।

जब कभी आँगन में सुखवन पड़ता
मुझे पक्षियों से निगरानी करने के लिए

बैठा दिया जाता,
मेरी सारी कोशिशों के बावजूद

वे अपना हिस्सा ले ही जाते थे।
मेरा मन-पखेरु किताबों में

अक्षरों के दाने चुग रहा होता
और वे अनाजों के दाने।

सुबह और शाम गाँव के सभी आँगनों से
उठता था धुँआ

जो सह नौ भुनक्तु के उद्घोष के साथ
मिलकर आसमान में छा जाता था

और इस बात की तसदीक करता था
कि घरों में चूल्हे जले हैं।

आँगन में ही शाम में
महिलाओं की चौपाल लगती,

आँगन में ही शादी का मड़वा बनता,
हल्दी और मटकोर की रस्में होतीं,

आँगन में ही रात में
विवाह की सप्तपदी होती

और अगले दिन दोपहर में
खिचड़ी खाने की रस्म होती

और दूल्हे को फूल के बर्तन में
खाना परोसा जाता था,

पहले वह कोहनाता था
फिर मान-मनौवल होने पर

और उसकी माँगे पूरी होने पर
खिचड़ी खाता था।

और फिर महिलाओं की
गुड़ लगी गालियों से होता

त्रेता युग से चली आ रही
एक परंपरा का निर्वाह—

जेंवत देहि मधुर धुनि गारी,
ले-ले नाम पुरुष अरु नारी॥

दिन में अगर सूरज आ बैठता था आँगन में
तो रात में चाँद सितारे भी उतर आते थे आँगन में,

किसी अँधेरी रात में तो
पूरा आँगन ही तारामंडल बन जाता

कहीं कचपचिया तारे चिढ़ा रहे होते
तो सप्तर्षि अपनी वरदा-मुद्रा के साथ खड़े मिलते।

अरुंधती, अगस्त्य, रोहिणी और जाने कितने तारे
अपने द्युति लोक से आँगन में निहारते रहते।

आँगन हमारे मन का प्रतिबिंब था,
वहाँ पीढ़ियों और परिवार की परंपरा

सजदे में झुकी हुई मिलती थी,
वहाँ कोई अँगुली तर्जनी थी

कोई मध्यमा थी
कोई अनामिका और कनिष्ठिका

लेकिन उन सबके मिलने से
बना हुआ एक विशालकाय हाथ था

जो सबके सिर पर धरा हुआ था।
वह रक्षति रक्षितः का एक

पारिवारिक भाष्य था।
आँगन जहाँ शील और शर्म जैसे

संस्कारों के गुरुकुल थे
तो अंतर्मुखता की उलझी गाँठों को

खोलने की मुँहफट चाभियाँ।
वहाँ दिन भर के थके-हारे मन

शाम को टिका लेते थे सिर
किसी दुनिया ढोकर बूढ़े हुए कंधे पर,

कभी-कभी सुबक भी लेते थे
और हलके हो जाते थे।

अक्सर घुटनों पर चलकर आती
कोई दंतुरित मुस्कान

पल भर मे हर लेती थी
सारा तनाव और थकान।

जब तक घर में आँगन था
मन में भी आँगन था,

तब मन में भी अवकाश था,
विश्वास था, आश्वास था,

साहचर्य था, सच्चाई थी
और आँगन की वह भूमि

सभी रिश्तों की साझी कमाई थी।

अखिलेश जायसवाल
नवें दशक में सामने आए संवेदनशील कवि, लेखक।

क्यों लोग ताबूत में लेटकर जिंदगी ढूंढ रहे हैं ?

जापान के नए ट्रेंड में छिपा है शांति का राज

@ सौम्य चौबे

दुनिया भर में सुकून खोजने के तरीके अलग-अलग हैं। कोई पहाड़ों की ओर जाता है, कोई समुद्र के किनारे बैठता है, कोई मंदिरों और ध्यान केंद्रों का सहारा लेता है। लेकिन दुनिया के सबसे विकसित देशों में शामिल Japan में इन दिनों एक ऐसा ट्रेंड तेजी से चर्चा में है, जिसने लोगों को सोचने पर मजबूर कर दिया है। यहां लोग शांति पाने के लिए ताबूत में लेट रहे हैं।यह सुनने में अजीब लगता है, लेकिन जापान में "कॉफिन मेडिटेशन" यानी ताबूत में लेटकर ध्यान करने की गतिविधि धीरे-धीरे लोकप्रिय हो रही है। कई फ्यूनरल सेंटर और वेलनेस स्टूडियो लोगों को यह अनुभव दे रहे हैं, जहां वे कुछ समय के लिए ताबूत में लेटते हैं, आंखें बंद करते हैं और जीवन तथा मृत्यु के बारे में सोचते हैं।पहली नजर में यह एक प्रयोग जैसा लगता है, लेकिन इसके पीछे छिपी कहानी कहीं ज्यादा गहरी और मानवीय है।

तरक्की के बीच बढ़ती बेचैनी

तकनीक, अनुशासन और आर्थिक विकास के मामले में जापान लंबे समय से दुनिया के लिए उदाहरण रहा है। तेज रफ्तार ट्रेनें, अत्याधुनिक रोबोटिक्स, सटीक समय व्यवस्था और मजबूत कार्य संस्कृति ने जापान को आधुनिकता का प्रतीक बना दिया।लेकिन इसी आधुनिकता के बीच एक दूसरी सच्चाई भी है। अकेलापन।पिछले कुछ वर्षों में जापान में मानसिक तनाव और अवसाद के मामले तेजी से बढ़े हैं। विशेष रूप से 15 से 29 वर्ष के युवाओं में आत्महत्या के आंकड़े चिंता का विषय बने हुए हैं। पढ़ाई का दबाव, नौकरी की प्रतिस्पर्धा, सामाजिक दूरी और भावनात्मक संवाद की कमी ने एक बड़ी पीढ़ी को अंदर से कमजोर किया है।बाहर से सब कुछ व्यवस्थित दिखाई देता है, लेकिन भीतर बेचैनी गहरी होती जा रही है।

मौत को महसूस कर जिंदगी को समझने की कोशिश

टोक्यों में आयोजित एक ऐसे ही कार्यक्रम में लोग शांत माहौल में एक-एक कर ताबूत में लेटते हैं। कमरे में हल्की रोशनी होती है, धीमा संगीत चलता है और आयोजक लोगों से कहते हैं कि वे अपने जीवन के बारे में सोचें।यह अनुभव कुछ मिनटों का होता है, लेकिन इसका असर कई लोगों पर लंबे समय तक रहता है।इस कार्यक्रम से जुड़ी प्रसिद्ध ताबूत डिजाइनर मिकाको कहती हैं कि उनका उद्देश्य लोगों को डराना नहीं, बल्कि उन्हें जीवन की कीमत समझाना है।उनके शब्दों में, "जब इंसान खुद को मृत्यु के करीब महसूस करता है, तब उसे याद आता है कि वह किन चीजों को अनदेखा कर रहा था।"यह विचार नया जरूर है, लेकिन इसकी जड़ें जीवन दर्शन में बहुत पुरानी हैं।

क्यों बढ़ रहा है यह ट्रेंड

जापान में अकेलेपन की समस्या पर लंबे समय से चर्चा हो रही है। वहां लोनली डेथ यानी अकेले मर जाने की घटनाएं भी सामने आती रही हैं। कई लोग महीनों तक समाज से कटे रहते हैं।युवाओं में डिजिटल जीवन बढ़ने के साथ वास्तविक रिश्ते कमजोर हुए हैं। परिवार छोटे होते गए, बातचीत कम होती गई और भावनाएं अंदर ही दबती चली गईं।ऐसे माहौल में लोग अब खुद को समझने के लिए नए रास्ते तलाश रहे हैं।कॉफिन मेडिटेशन उसी तलाश का हिस्सा है।यह लोगों को यह सोचने का अवसर देता है कि अगर जीवन सीमित है, तो उसे कैसे जीना चाहिए।

एक प्रतिभागी की कहानी

टोक्यो के एक कार्यक्रम में शामिल 27 वर्षीय एक युवक ने अनुभव साझा करते हुए कहा कि जब वह ताबूत में लेटा, तो उसे पहली बार एहसास हुआ कि वह कई वर्षों से सिर्फ काम कर रहा था, जी नहीं रहा था।उसने बताया कि ताबूत बंद होने के कुछ ही सेकंड बाद उसे अपने माता-पिता याद आए। फिर उसे अपने दोस्त याद आए, जिनसे वह धीरे-धीरे दूर हो गया था।कार्यक्रम से बाहर आने के बाद उसने सबसे पहले अपने परिवार को फोन किया।यह बदलाव किसी तकनीक से नहीं, बल्कि एक एहसास से आया।आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी समस्याआज दुनिया तेजी से आगे बढ़ रही है। सुविधाएं बढ़ रही हैं, लेकिन संतोष कम हो रहा है।लोगों के पास समय कम है और तनाव ज्यादा। सोशल मीडिया ने संवाद को तेज तो किया है, लेकिन भावनाओं को गहरा नहीं किया।जापान का यह ट्रेंड दरअसल उसी संकट की ओर इशारा करता है।समस्या मौत नहीं है, समस्या वह जीवन है जिसमें इंसान धीरे-धीरे खुद से दूर हो रहा है।

रिश्तों की कमी और भावनात्मक दूरी है सबसे बड़ी वजह

विशेषज्ञों का मानना है कि मानसिक तनाव का एक बड़ा कारण रिश्तों का कमजोर होना है।पहले परिवार बड़े होते थे, बातचीत ज्यादा होती थी और जीवन साझा होता था। अब जीवन व्यक्तिगत हो गया है।हर व्यक्ति अपने लक्ष्य, करियर और उपलब्धियों में इतना व्यस्त है कि भावनात्मक जुड़ाव पीछे छूट गया है।कॉफिन मेडिटेशन का संदेश यही है कि जीवन की असली ताकत उपलब्धियों में नहीं, संबंधों में है।भारत जैसे समाज में परिवार और सामाजिक जुड़ाव अभी भी मजबूत हैं, लेकिन यहां भी तेजी से बदलाव हो रहा है।शहरों में अकेलापन बढ़ रहा है। युवा दबाव में हैं। प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है।ऐसे समय में जापान का यह उदाहरण चेतावनी भी है और सीख भी।यह बताता है कि विकास जरूरी है, लेकिन भावनात्मक संतुलन उससे भी ज्यादा जरूरी है।कॉफिन मेडिटेशन का उद्देश्य लोगों को मृत्यु का डर दिखाना नहीं, बल्कि जीवन का महत्व समझाना है।जब इंसान यह सोचता है कि जीवन सीमित है, तब वह छोटी-छोटी खुशियों को महत्व देने लगता है।वह परिवार को समय देता है। रिश्तों को संभालता है। खुद से बात करता है।यही इस प्रयोग की असली ताकत है।

क्या यह ट्रेंड दुनिया में फैलेगा

मानसिक स्वास्थ्य को लेकर दुनिया भर में जागरूकता बढ़ रही है। ध्यान, योग और माइंडफुलनेस जैसी पद्धतियां पहले ही वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय हो चुकी हैं।संभव है कि आने वाले समय में ऐसे प्रयोग अन्य देशों में भी दिखाई दें।लेकिन असली सवाल यह नहीं है कि लोग ताबूत में क्यों लेट रहे हैं।असली सवाल यह है कि लोग जीवन में शांति क्यों नहीं पा रहे।जापान हमें यह नहीं सिखा रहा कि शांति पाने के लिए ताबूत में लेटना जरूरी है। वह हमें यह याद दिला रहा है कि जीवन को समझना जरूरी है।तकनीक हमें सुविधा दे सकती है, लेकिन सुकून नहीं।सुकून रिश्तों से आता है, संवाद से आता है और उस एहसास से आता है कि हम अकेले नहीं हैं।शायद यही कारण है कि आधुनिक दुनिया में सबसे विकसित समाज भी अब जीवन का अर्थ खोज रहा है।और यह खोज हमें भी सोचने पर मजबूर करती है कि हम जी रहे हैं, या सिर्फ आगे बढ़ रहे हैं।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

पीएम मोदी का इजरायल दौरा: भारत की मजबूत दोस्ती का नया अध्याय, इन बड़ी डील्स पर रहेगी नजर

यह दौरा भारत के लिए क्यों है खास?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 25 और 26 फरवरी 2026 को इजरायल गए थे। यह उनका 2017 के बाद दूसरा दौरा था। इस छोटे से दो दिन के दौरे में दोनों देशों ने अपने रिश्ते को स्पेशल स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप बना दिया। नाम रखा गया है शांति, इनोवेशन और समृद्धि के लिए स्पेशल स्ट्रेटेजिक पार्टनरशिप। पीएम मोदी ने इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू से मुलाकात की, इजरायल की संसद यानी नेशनल असेंबली में भाषण दिया और होलोकॉस्ट की यादगार जगह यद वासेम का दौरा किया। यह दौरा भारत के लिए बहुत खास है क्योंकि इजरायल छोटा देश है लेकिन दुनिया में सबसे आगे की तकनीक वाला देश है। भारत को इसकी मदद से अपनी रक्षा व्यवस्था मजबूत करनी है, किसानों को नई तकनीक सिखानी है और युवाओं को अच्छी नौकरियां देनी हैं। भारत आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत 2047 का सपना देख रहा है। इस दौरे से उस सपने को पूरा करने में मदद मिलेगी। पहले 2017 के दौरे में भी रिश्ते मजबूत हुए थे। अब 2026 में 16 नए समझौते हुए हैं। इनमें रक्षा, व्यापार, कृषि, साइबर सुरक्षा और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्र शामिल हैं। आम भारतीय के लिए इसका मतलब है कि खेती में पानी कम लगेगा और फसल ज्यादा आएगी, देश की सुरक्षा मजबूत होगी और युवा विदेश में काम करके पैसे भेज सकेंगे। भारत पहले से ही इजरायल से ड्रोन और मिसाइल लेता है। अब दोनों देश साथ मिलकर नई चीजें बनाएंगे। यह भारत को दुनिया में मजबूत खिलाड़ी बनाएगा। लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि यह दौरा ठीक समय पर नहीं हुआ क्योंकि इजरायल और आसपास के इलाकों में तनाव था। फिर भी भारत हमेशा कहता है कि वह सभी देशों से अच्छे रिश्ते रखता है और शांति चाहता है। इस दौरे से पता चलता है कि सही दोस्ती से देश कितना आगे बढ़ सकता है। आम आदमी सोच सकता है कि छोटे देश भी बड़े देश की मदद कैसे कर सकते हैं। यह सोचने वाली बात है कि तकनीक और दोस्ती मिलकर कैसे जीवन आसान बनाती है। कुल मिलाकर यह दौरा भारत की विदेश नीति का बड़ा कदम है जो भविष्य में बहुत फायदा देगा।

रक्षा क्षेत्र में नई डील्स और मजबूत सहयोग

इस दौरे में रक्षा क्षेत्र की डील्स सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। नवंबर 2025 में दोनों देशों ने रक्षा सहयोग का मेमोरेंडम ऑफ अंडरस्टैंडिंग साइन किया था। अब फरवरी 2026 में और आगे बढ़कर संयुक्त विकास, उत्पादन और तकनीक ट्रांसफर पर काम करने का फैसला हुआ। भारत इजरायल से मिसाइल, ड्रोन और एडवांस्ड डिफेंस सिस्टम लेता है। अब दोनों देश साथ मिलकर नई चीजें बनाएंगे। इससे भारत की सेना और मजबूत होगी। सीमा पर सुरक्षा बढ़ेगी और आतंकवाद से बेहतर लड़ाई हो सकेगी। इजरायल की आयरन डोम जैसी तकनीक भारत को भी मदद कर सकती है। इस डील से भारत को विदेश से हथियार खरीदने की जरूरत कम होगी। आत्मनिर्भर भारत का सपना पूरा होगा। आम सैनिक और आम नागरिक दोनों सुरक्षित महसूस करेंगे। दौरे में दोनों नेताओं ने आतंकवाद की निंदा की। उन्होंने 7 अक्टूबर 2023 के हमले और अप्रैल 2025 के पहलगाम हमले का जिक्र किया। भारत और इजरायल दोनों आतंकवाद के खिलाफ एक साथ खड़े हैं। यह सहयोग भारत के लिए खास है क्योंकि हमारे पड़ोस में चुनौतियां हैं। रक्षा डील्स से अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी क्योंकि नई फैक्टरियां बनेंगी और नौकरियां आएंगी। युवा इंजीनियर इन प्रोजेक्ट्स में काम कर सकेंगे। लेकिन कुछ विपक्षी नेता कहते हैं कि इस समय रक्षा पर ज्यादा फोकस करना ठीक नहीं क्योंकि गाजा में हालात खराब हैं। भारत फिर भी कहता है कि रक्षा सहयोग शांति के लिए है न कि युद्ध के लिए। यह डील भारत को वैश्विक स्तर पर मजबूत बनाएगी। सोचने वाली बात यह है कि छोटे देश की तकनीक बड़े देश की रक्षा कैसे बदल सकती है। कुल मिलाकर रक्षा क्षेत्र की ये डील्स भारत के भविष्य को सुरक्षित बनाएंगी और देश को आत्मनिर्भर बनाएंगी। लोग उम्मीद कर रहे हैं कि इन डील्स से सैन्य खर्च कम होगा और विकास ज्यादा होगा।

व्यापार और निवेश की नई राहें खुल रही हैं

दोनों देश फ्री ट्रेड एग्रीमेंट यानी एफटीए को तेजी से आगे बढ़ाने पर सहमत हुए हैं। सितंबर 2025 में इन्वेस्टमेंट एग्रीमेंट साइन हो चुका था। अब व्यापार बढ़ाने के लिए और कदम उठाए जा रहे हैं। अभी दोनों देशों का व्यापार अच्छा है लेकिन एफटीए से यह कई गुना बढ़ सकता है। इजरायल से भारत को टेक्नोलॉजी और मशीनरी आएगी। भारत से इजरायल को कृषि उत्पाद और अन्य सामान जाएगा। इससे दोनों देशों के बिजनेस को फायदा होगा। आम व्यापारी और किसान दोनों खुश होंगे। दौरे में यूपीआई को इजरायल से जोड़ने का समझौता हुआ। अब भारतीय पर्यटक और व्यापारी आसानी से पैसे भेज और ले सकेंगे। इससे डिजिटल पेमेंट आसान होगा। निवेश बढ़ेगा क्योंकि दोनों देशों के बिजनेसमैन एक दूसरे पर भरोसा करेंगे। इजरायल में भारतीय कंपनियां रेल, रोड और एयरपोर्ट प्रोजेक्ट्स में काम कर सकेंगी। इससे भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी और विदेशी मुद्रा आएगी। युवा उद्यमी नई संभावनाएं देख सकेंगे। लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि ज्यादा व्यापार से हम इजरायल पर निर्भर हो सकते हैं। भारत की नीति संतुलित है। वह अरब देशों से भी अच्छे रिश्ते रखता है। एफटीए से रोजगार बढ़ेगा और महंगाई पर काबू रहेगा। आम आदमी को सस्ती चीजें मिलेंगी। सोचने वाली बात यह है कि व्यापार की डील्स कैसे देशों को जोड़ती हैं। इस दौरे से पता चलता है कि आर्थिक सहयोग से दोनों देश आगे बढ़ेंगे। लोग उम्मीद करते हैं कि एफटीए जल्दी पूरा हो और व्यापार दोगुना हो जाए। कुल मिलाकर ये डील्स भारत की अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाई देंगे और युवाओं के लिए अवसर पैदा करेंगे।

कृषि, टेक्नोलॉजी और युवाओं के लिए नए अवसर

कृषि क्षेत्र में नया इंडिया इजरायल इनोवेशन सेंटर बनेगा। पहले से ही 35 सेंटर चल रहे हैं और एक मिलियन से ज्यादा किसान ट्रेनिंग ले चुके हैं। ड्रिप इरिगेशन जैसी तकनीक से पानी बचता है और फसल बढ़ती है। अब और ज्यादा सेंटर खुलेंगे। मछली पालन और एक्वाकल्चर पर भी समझौता हुआ। इससे भारतीय किसान आधुनिक तरीके सीख सकेंगे। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और साइबर सिक्योरिटी पर अलग मेमोरेंडम साइन हुए। इजरायल में साइबर एक्सीलेंस सेंटर बनेगा। इससे भारत की डिजिटल सुरक्षा मजबूत होगी।

युवा आईटी प्रोफेशनल्स को नई स्किल्स मिलेंगी। सबसे बड़ा फायदा युवाओं को मिलेगा। इजरायल में अगले पांच साल में 50 हजार अतिरिक्त भारतीय कामगारों को वीजा मिलेगा। निर्माण, मैन्युफैक्चरिंग और रेस्टोरेंट सेक्टर में काम मिलेगा। इससे बेरोजगारी कम होगी और परिवारों को पैसे मिलेंगे। शिक्षा क्षेत्र में भी सहयोग बढ़ेगा। यूनिवर्सिटी लेवल पर एक्सचेंज प्रोग्राम होंगे। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से शिक्षा बेहतर होगी। आम युवा सोच सकता है कि विदेश में काम करके वह अपने गांव का विकास कर सकता है। ये अवसर भारत के युवाओं को नई उम्मीद देते हैं। लेकिन कुछ लोग चिंता करते हैं कि कामगारों की सुरक्षा का ध्यान रखना जरूरी है। भारत सरकार कहती है कि कामगारों के अधिकार सुरक्षित रहेंगे। सोचने वाली बात यह है कि तकनीक और श्रम मिलकर कैसे देशों को जोड़ते हैं। इस दौरे से कृषि, टेक और जॉब्स की डील्स भारत को मजबूत बनाएंगी। किसान खुश होंगे, युवा आगे बढ़ेंगे और देश विकसित होगा।

क्षेत्रीय शांति और भारत की संतुलित विदेश नीति

दौरे में गाजा मुद्दे पर भी बात हुई। दोनों देशों ने अमेरिका के गाजा शांति प्लान का स्वागत किया। भारत दो राज्य समाधान का समर्थन करता है और गाजा में आम लोगों की मौत पर चिंता जताता है। पीएम मोदी ने कहा कि मानवता को संघर्ष का शिकार नहीं बनना चाहिए। भारत आतंकवाद की निंदा करता है लेकिन शांति चाहता है। इजरायल के साथ मजबूत रिश्ते रखते हुए भारत अरब देशों, ईरान और फिलिस्तीन से भी अच्छे संबंध बनाए रखता है। आई2यू2 ग्रुप जैसे प्लेटफॉर्म पर काम जारी है। कुछ विपक्षी नेता कहते हैं कि दौरा गलत समय पर हुआ क्योंकि इजरायल और ईरान के बीच तनाव था। उन्होंने इसे राजनीतिक समर्थन बताया। लेकिन सरकार कहती है कि भारत अपनी स्वतंत्र नीति चलाता है और सभी के साथ बात करता है। यह संतुलित तरीका भारत को विश्वसनीय बनाता है। आम भारतीय सोच सकता है कि एक देश कैसे कई पक्षों से दोस्ती रख सकता है। यह सोचने वाली बात है कि शांति के लिए मजबूत रिश्ते जरूरी हैं। दौरे से क्षेत्रीय स्थिरता बढ़ेगी और भारत की आवाज दुनिया में और मजबूत होगी। कुल मिलाकर यह दौरा दिखाता है कि भारत सही संतुलन बनाकर आगे बढ़ रहा है। लोग उम्मीद करते हैं कि शांति बनी रहे और सभी डील्स से फायदा हो।

होली है या साल का सबसे बड़ा DJ-दारू फेस्टिवल?

परंपरा से पार्टी तक का सफर, जहां रंगों से ज्यादा दिखावा चमक रहा है

लोक परंपरा से लाइफस्टाइल ट्रेंड तक, बदलती होली का सामाजिक सच

@ रिंकू विश्वकर्मा

होली का नाम लेते ही कभी गांव की गलियां याद आती थीं। ढोलक की थाप, फाग के गीत, घरों से उठती गुजिया और मालपुए की खुशबू, और हर दरवाजे पर खुलकर मिलते लोग। रंग सिर्फ चेहरे पर नहीं लगता था, दिलों पर भी लगता था। लेकिन समय के साथ होली का रंग बदल गया है। आज कई जगह यह त्योहार परंपरा से ज्यादा प्रदर्शन का माध्यम बनता जा रहा है।यह कहना गलत होगा कि पूरे देश में होली का स्वरूप बदल गया है। आज भी लाखों लोग परंपरागत तरीके से इसे मनाते हैं, खासकर उत्तर भारत के गांवों और छोटे शहरों में। लेकिन बड़े शहरों और डिजिटल संस्कृति के प्रभाव में त्योहार का रूप तेजी से बदल रहा है।

जब त्योहार से ज्यादा इवेंट बन गई होली

आज के समय में होली का मतलब कई जगहों पर क्लब पार्टी, रेन डांस, तेज संगीत, शराब और सोशल मीडिया पर रील बनाने तक सीमित होता जा रहा है। रंग खेलने से पहले लोकेशन चुनी जाती है, फिर कपड़े, फिर कैमरा एंगल। त्योहार का केंद्र अब मिलना-जुलना कम और दिखना ज्यादा हो गया है।कुछ रिपोर्ट्स के अनुसार, पिछले साल उत्तर प्रदेश में होली के दौरान शराब की बिक्री 1200 करोड़ रुपए से अधिक पहुंच गई। यह आंकड़ा सिर्फ एक राज्य का है। पूरे देश की तस्वीर इससे कहीं बड़ी हो सकती है। इसी तरह कई शहरों में नशे से जुड़े मामलों में भी त्योहार के दौरान बढ़ोतरी दर्ज की जाती है।ड्रग्स नियंत्रण से जुड़े अधिकारियों का कहना है कि त्योहारों के समय सिंथेटिक नशे की मांग बड़े शहरों में अचानक बढ़ जाती है। यह बदलाव सिर्फ त्योहार की शैली नहीं बदल रहा, बल्कि समाज की दिशा भी संकेत कर रहा है।

खाने की परंपरा से मांसाहारी बाजार तक

होली के समय पकवान बनाना पुरानी परंपरा रही है। लेकिन कई शहरों में अब त्योहार के आसपास मांस की मांग तेजी से बढ़ती दिखाई देती है। वर्ष 2023 में पटना में होली से पहले करीब 12000 क्विंटल मटन और 1200 क्विंटल चिकन की अग्रिम बुकिंग की खबरें सामने आई थीं। इसके अलावा घरों में होने वाली अलग खरीदारी इस आंकड़े से बाहर रहती है।त्योहारों में खान-पान का बदलना स्वाभाविक है, लेकिन सवाल तब उठता है जब त्योहार का सांस्कृतिक स्वरूप पीछे छूटने लगे।

ब्रज की होली और बढ़ती चिंताएं

ब्रज की होली दुनिया भर में प्रसिद्ध है। यहां की लठमार होली और फूलों की होली भारत की सांस्कृतिक पहचान मानी जाती है। हर साल हजारों विदेशी पर्यटक इन रंगों को देखने आते हैं।लेकिन पिछले कुछ वर्षों में यहां भी अव्यवस्था और बदतमीजी की शिकायतें सामने आई हैं। स्थानीय प्रशासन को कई बार अतिरिक्त सुरक्षा व्यवस्था करनी पड़ी है। कुछ वीडियो भी वायरल हुए जिनमें पर्यटकों को जबरन रंग लगाने या अनुचित व्यवहार की घटनाएं देखी गईं।यह वही ब्रज है जहां होली प्रेम और भक्ति का प्रतीक मानी जाती थी। जहां रंग का अर्थ था स्नेह, और मिलन का अर्थ था अपनापन।

जहां अभी भी बची है परंपरा

अगर आज भी भारत की पारंपरिक होली को देखना हो तो गांवों की ओर जाना होगा। वहां आज भी लोग एक-दूसरे के घर जाते हैं। ढोलक पर फाग गाया जाता है। बुजुर्ग आशीर्वाद देते हैं और बच्चे रंग से ज्यादा रिश्तों को समझते हैं।गांवों में होली सिर्फ एक दिन का त्योहार नहीं होती, बल्कि कई दिनों तक चलने वाला सामाजिक उत्सव होती है। यहां कोई मंच नहीं होता, कोई प्रायोजक नहीं होता, कोई टिकट नहीं होता। यहां सिर्फ लोग होते हैं और उनके बीच संबंध होते हैं।

सोशल मीडिया और त्योहार की बदलती मानसिकता

डिजिटल दौर ने त्योहारों को नया मंच दिया है। लेकिन इसके साथ एक नई समस्या भी आई है-दिखावे की संस्कृति।अब त्योहार मनाने से पहले यह सोचा जाता है कि फोटो कैसी आएगी। रंग खेलने से ज्यादा ध्यान वीडियो बनाने पर होता है। सोशल मीडिया पर लाइक और व्यूज ने त्योहार की आत्मा को प्रभावित किया है।समाजशास्त्रियों का मानना है कि जब त्योहार का केंद्र सामूहिक अनुभव से हटकर व्यक्तिगत प्रदर्शन बन जाता है, तब उसकी सांस्कृतिक गहराई कम होने लगती है।

होली का असली अर्थ क्या था

होली सिर्फ रंगों का त्योहार नहीं है। यह बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। यह सामाजिक दूरी मिटाने का अवसर है। यह वह दिन है जब पुराने मनमुटाव खत्म किए जाते हैं।पहले लोग होली से पहले एक-दूसरे से मिलकर कहते थे अगर कोई गलती हुई हो तो माफ कर देना। यह परंपरा समाज को जोड़ती थी।आज जरूरत है कि उस भावना को फिर से याद किया जाए।

बदलते समय में संतुलन की जरूरत

समय के साथ त्योहार बदलते हैं। यह स्वाभाविक है। संगीत बदलेगा, तरीके बदलेंगे, खान-पान बदलेगा। लेकिन त्योहार का मूल उद्देश्य नहीं बदलना चाहिए।अगर होली सिर्फ नशे और शोर तक सीमित हो जाए तो यह संस्कृति का नुकसान है। अगर यह रिश्तों को मजबूत करे, तो यही इसकी असली जीत है।आज की पीढ़ी सबसे ज्यादा प्रभावशाली भी है और सबसे ज्यादा प्रभावित भी। सोशल मीडिया, बाजार और आधुनिक जीवनशैली के बीच संतुलन बनाना आसान नहीं है। लेकिन यही पीढ़ी अगर चाहे तो होली को नए और सकारात्मक रूप में प्रस्तुत कर सकती है।स्कूलों और परिवारों में त्योहारों की सांस्कृतिक शिक्षा देना जरूरी हो गया है। बच्चों को यह समझाना होगा कि होली सिर्फ रंग लगाने का नाम नहीं, बल्कि संबंधों को मजबूत करने का अवसर है।

रंग बचे हैं, पर रिश्ते बचाने होंगे

कभी होली पर दादी हाथ पकड़कर आंगन में ले जाती थीं। माथे पर हल्का सा गुलाल लगाकर कहती थीं खुश रहो। उस एक स्पर्श में त्योहार की पूरी आत्मा होती थी।आज रंगों के पैकेट बड़े हो गए हैं, लेकिन स्पर्श छोटा हो गया है। कैमरे बढ़ गए हैं, लेकिन बातचीत कम हो गई है। भीड़ बढ़ गई है, लेकिन अपनापन कम हो गया है।शायद रंग आज भी वही हैं, लेकिन रिश्तों का रंग हल्का पड़ता जा रहा है।होली को बचाने के लिए सिर्फ गुलाल काफी नहीं है। सोच बदलनी होगी। त्योहार को फिर से इंसानों के बीच लाना होगा, स्क्रीन से निकालकर दिल तक पहुंचाना होगा।क्योंकि आखिर में होली रंगों से नहीं, रिश्तों से बनती है। और जब रिश्ते गहरे होते हैं, तभी रंग भी सच्चे लगते हैं।

राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम
भारत श्री

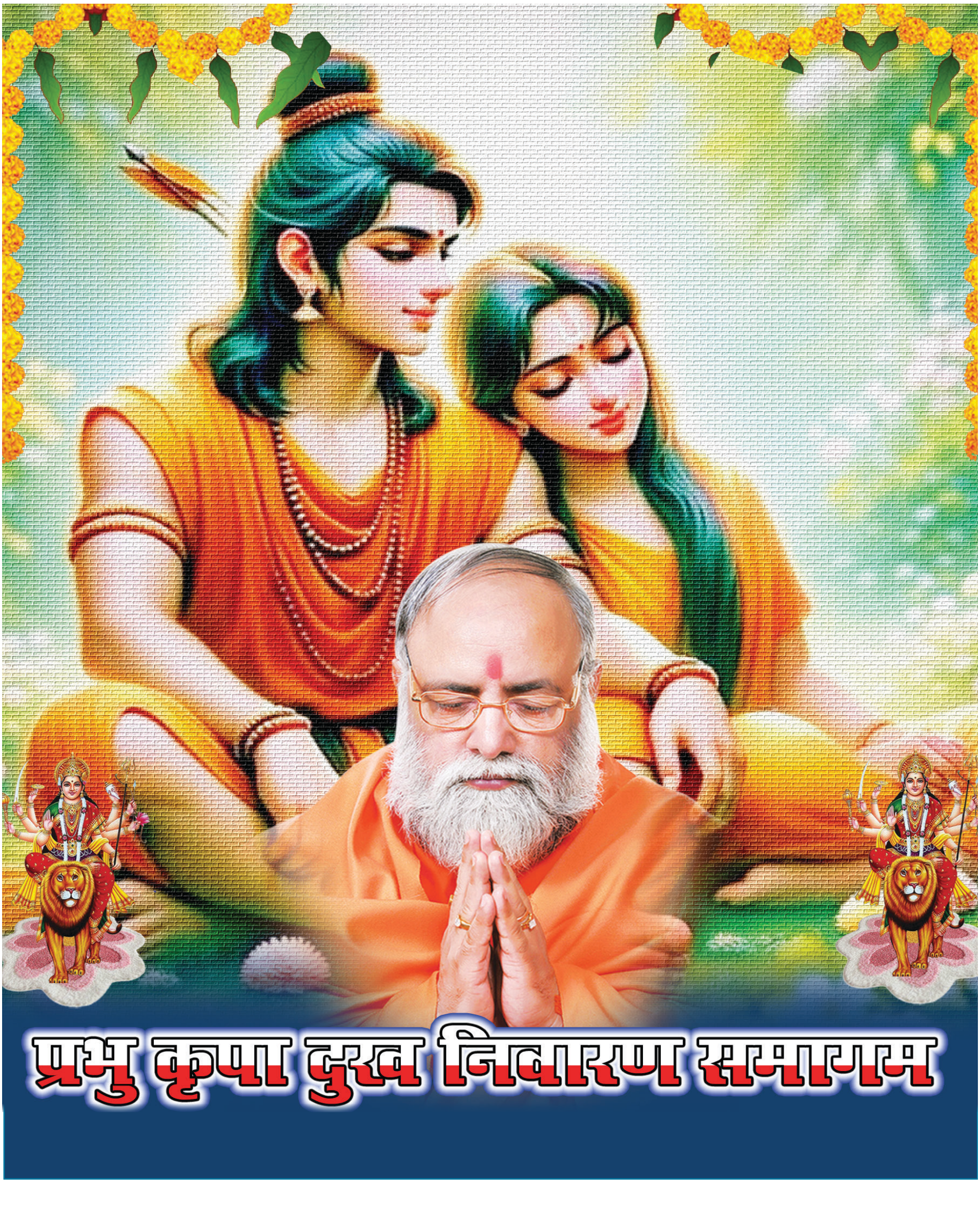

BY

Arihanta Industries

ULTIMATE HAIR SOLUTION

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML

15 ML

NO ARITIFICIAL COLOR FRAGRANCE CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.

ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in

Arihanta Industries